कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड

सागर रत्न

मार्च 2026



कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड



गणतंत्र दिवस



कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड

भारत सरकार का उद्यम

(एक मिनिरत्न अनुसूची 'ए' कंपनी)

पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय

पेरुमानूर पी.ओ., कोच्ची - 15

19 वाँ अंक

संपादक मंडल

संरक्षक

श्री जोस वी जे

निदेशक (वित्त) व अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
(अतिरिक्त प्रभार)

संपादक

श्री सुबाष ए के

महाप्रबंधक
(मानव संसाधन व अध्ययन विकास)

संपादक सदस्य

श्रीमती सरिता जी

प्रबंधक (राजभाषा)

श्रीमती लिजा जी एस

सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

श्रीमती आतिरा आर एस

हिंदी टंकक

सागर रत्न

हिंदी गृह पत्रिका

मार्च 2026

अनुक्रमणिका

1)	अध्यक्षीय प्रेरक वाणी	4
2)	संपादकीय अभिव्यक्ति	5
3)	दूरदर्शी नेतृत्व की विरासत	6
4)	राष्ट्र की लहरों पर बहते शब्द — सागर रत्न	7
5)	कविता	8
6)	पुरस्कार और उपलब्धियाँ	11
7)	राजभाषा समाचार	13
8)	शब्दावली	25
9)	लघु कथा	26
10)	कंपनी समाचार	29
11)	लेख	34
12)	व्यंजन	40
13)	चित्र रचनाएँ	41





अध्यक्षीय प्रेरक वाणी



प्रिय साथियों,

हमारी हिंदी गृह पत्रिका "सागर रत्न" के 19वें अंक के माध्यम से आप सभी से संवाद करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। दिनांक 31 जनवरी 2026 को आदरणीय श्री मधु एस नायर जी की सेवानिवृत्ति के पश्चात मुझे कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का अतिरिक्त दायित्व सौंपा गया है। यह दायित्व मेरे लिए केवल एक पदभार नहीं, बल्कि आप सभी के विश्वास तथा कंपनी की गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाने का संकल्प है।

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड में राजभाषा हिंदी का प्रयोग केवल संवैधानिक दायित्व ही नहीं, बल्कि हमारी संगठनात्मक संस्कृति और पहचान का अभिन्न अंग है। "सागर रत्न" के इस अंक के माध्यम से हिंदी कार्यान्वयन और कंपनी से संबंधित गतिविधियों एवं उपलब्धियों को साझा करते हुए हमें गर्व की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका मात्र सूचना-पत्र नहीं, बल्कि कोचीन शिपयार्ड परिवार की सामूहिक भावना का दर्पण है, जो विभिन्न स्तरों और विभागों के बीच सेतु का कार्य करते हुए पारदर्शिता, सहभागिता और अपनत्व को सुदृढ़ करती है।

प्रत्येक अंक में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन, प्रशिक्षण पहलों, पोत निर्माण/मरम्मत-संबंधी विकास, सामाजिक दायित्व तथा सांस्कृतिक गतिविधियों को विशेष स्थान दिया जाता है। हमारा सतत प्रयास है कि यह पत्रिका अधिक उपयोगी, ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायी बने तथा हिंदी के माध्यम से कोचीन शिपयार्ड की गौरवगाथा को व्यापक रूप में प्रस्तुत करती रहे।

कोचीन शिपयार्ड की वास्तविक शक्ति इसके समर्पित कर्मचारी हैं। आप सभी के परिश्रम, अनुशासन और रचनात्मक सोच ने ही संस्थान को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सब मिलकर आने वाले वर्षों में और भी बड़े लक्ष्य प्राप्त करेंगे तथा देश की समुद्री शक्ति को और सशक्त बनाएँगे।

इस अवसर पर मैं पत्रिका के संपादकीय दल एवं इसके उन्नयन में योगदान देने वाले समस्त कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देती हूँ तथा आगामी कार्यों हेतु मंगलकामनाएँ व्यक्त करता हूँ।

जय हिंद।

जोस वी. जे.
निदेशक (वित्त) व अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (अतिरिक्त प्रभार)

संपादकीय अभिव्यक्ति



प्रिय सहकर्मियों एवं पाठकों,

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड के परिवार की पत्रिका "सागर रत्न" के इस नवीन अंक में आप सभी का हार्दिक स्वागत है। यह पत्रिका हमारे संस्थान की गतिविधियों का केवल विवरण नहीं, बल्कि उसकी जीवंत ऊर्जा, समर्पण और नवाचार का साक्षात् प्रतिबिंब है, जो हमारे हज़ारों कर्मनिष्ठ सहयोगियों के अथक प्रयासों से भारतीय पोत निर्माण को निरंतर प्रगति और उत्कृष्टता की नई दिशाओं में अग्रसर कर रहा है।

विगत वर्षों में शिपयार्ड ने तकनीक, गुणवत्ता और नवाचार के क्षेत्र में जो कीर्तिमान स्थापित किए हैं, वे हम सबके सामूहिक परिश्रम का परिणाम हैं। "सागर रत्न" का उद्देश्य है कि इन सफलताओं के साथ-साथ हमारे कर्मचारियों के अनुभव, विचार, साहित्यिक रुचियाँ और सामाजिक पहल भी आप तक पहुँचें। इस संस्करण में राजभाषा हिंदी के प्रोत्साहन एवं कर्मचारियों की मौलिक रचनाओं को प्रमुख स्थान प्रदान किया गया है, ताकि ये सीधे आपके हृदय से संवाद कर सकें।

हम दृढ़ता से मानते हैं कि संगठन की असली ऊर्जा मानवीय संवेदना और पारिवारिक अपनत्व से जन्म लेती है। यह पत्रिका उन्हीं मूल्यों को जोड़ते हुए प्रबंधन व कर्मचारियों, अनुभव व नवाचार तथा कार्य और परिवार के बीच सेतु का कार्य करती है।

आप सभी से अनुरोध है कि अपनी रचनाएँ, सुझाव और उपलब्धियाँ निरंतर भेजते रहें, ताकि "सागर रत्न" को और अधिक समृद्ध, सार्थक एवं उपयोगी बनाया जा सके। आइए, हम सब मिलकर कोचीन शिपयार्ड की गौरवशाली यात्रा को अपने शब्दों, विचारों और अनुभवों के माध्यम से और अधिक सशक्त बनाएँ।

शुभकामनाओं सहित,

सुबाष ए के

सुबाष ए के

महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं अध्ययन विकास)



दूरदर्शी नेतृत्व की विरासत

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के रूप में श्री मधु एस. नायर का कार्यकाल संगठन के इतिहास में परिवर्तन, प्रगति और गौरव का प्रतीक रहा है। वर्ष 1988 में कार्यकारी प्रशिक्षु के रूप में सीएसएल से जुड़ने वाले श्री मधु एस नायर ने अपने अथक परिश्रम, तकनीकी दक्षता और दूरदर्शी सोच के बल पर संगठन के सर्वोच्च पद तक की यात्रा तय की।

एक प्रख्यात नौसैनिक वास्तुविद् के रूप में उन्होंने सीएसएल को तकनीकी नवाचार और कार्यनीतिक विस्तार की दिशा में अग्रसर किया। उनके नेतृत्व में सीएसएल ने न केवल भारत में बल्कि अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भी अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई। वर्ष 2017 में सफल आईपीओ, अनुसूची – ए सीपीएसई का दर्जा प्राप्त करना, तथा देश-विदेश में पोत मरम्मत सुविधाओं का विस्तार उनके कार्यकाल की प्रमुख उपलब्धियाँ रहीं।

उनकी नेतृत्व यात्रा की सबसे ऐतिहासिक उपलब्धि भारत के पहले स्वदेशी वायुयान वाहक आईएनएस विक्रांत का सफल निर्माण एवं राष्ट्र को समर्पण रही। यह परियोजना न केवल सीएसएल की तकनीकी क्षमता का प्रमाण बनी, बल्कि 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्प को भी साकार करने वाली उपलब्धि सिद्ध हुई।

श्री मधु एस नायर ने सदैव मानव-केंद्रित नेतृत्व, कौशल विकास और गुणवत्ता आधारित कार्यसंस्कृति पर बल दिया। उनके मार्गदर्शन में सीएसएल एक आधुनिक, नवोन्मेषी और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी संगठन के रूप में विकसित हुआ। उनका योगदान आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत बना रहेगा।

सीएसएल में राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन एवं प्रोत्साहन में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक रहा है। उनके मार्गदर्शन में हिंदी को औपचारिक दायित्व से आगे बढ़कर, संगठनात्मक कार्यसंस्कृति का अभिन्न अंग बनाने हेतु सार्थक प्रयास किए गए।

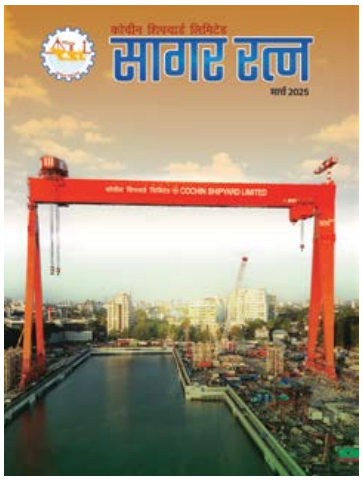
उनके कार्यकाल में स्थापित उच्च मानंदड, पेशेवर उत्कृष्टता और मानवीय संवेदनशीलता सीएसएल की कार्यसंस्कृति का अभिन्न अंग बन चुके हैं जो संगठन को नई ऊँचाइयों की ओर अग्रसर करते रहेंगे।

सेवानिवृत्ति के इस महत्वपूर्ण अवसर पर, सीएसएल परिवार श्री मधु एस. नायर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है और उनके उत्तम स्वास्थ्य, संतोषपूर्ण एवं उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक कामना करता है।

राष्ट्र की लहरों पर बहते शब्द — सागर रत्न

अपने अब तक के जीवन काल में मैंने अनेक पत्रिकाओं को पढ़ा, लिखा, समझा और उनके उद्देश्य को जाना। सागर रत्न के विगत दो अंक पढ़ कर ही मुझे इसके महान उद्देश्य का ज्ञान हो गया। इस पत्रिका का नाम बहुत ही सार्थक है क्योंकि जिस प्रकार एक सागर में अनंत रत्न, धातुएं और अनंत वनस्पतियाँ जीवंत होती हैं ठीक उसी प्रकार इस पत्रिका में भी हिंदी के अनंत अनमोल रत्न और साथ ही सी एस एल की राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय पहचान और उसके सूक्ष्म से लेकर विराट कार्यों को भी सम्पादित किया गया है। हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं को मैंने इसमें प्रस्फुटित होते देखा चाहे वह यात्रा वृतांत हों, कविता हो, लेख हो, पाक कला की जानकारी हो, जीवन के अनुभव से परिपूर्ण जीवन शैली को दर्शाते हुए आत्मकथात्मक लेख हो, चित्रकला और बोलचाल के हिंदी पर्याय हों सभी ने इस पत्रिका को भव्य बनने मे सहयोग किया है। एक बात जो मेरे दिल को छू गई कि न केवल कंपनी के कर्मचारी वरन् उनकी पत्नियों, बच्चों ने भी हिंदी को प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कंपनी द्वारा समय समय पर किए गए कार्यक्रम, भारत सरकार एवं अन्य देशों के साथ किए करार, देश की आंतरिक सुरक्षा में निभा रही अपनी सतत जिम्मेदारी यह दर्शाती है कि यह मात्र एक कंपनी नहीं बल्कि भारत के गौरव को और ऊँचा करने के क्षेत्र में अग्रणीय है।

संविधान द्वारा हिंदी भाषा को लेकर दिए गए दिशा निर्देशों का अक्षरक्ष पालन किया जा रहा है। मुख्य प्रबंध निदेशक जी से लेकर एक अंतिम कड़ी तक का व्यक्ति इसमें अपना पूरा योगदान दे रहा है यह बात प्रशंसा योग्य है। पत्रिका के सितंबर 2024 अंक में संपत कुमार जी की लिखी एक दंत कथा जुहो - बोल बाला, प्रिया ए. आर का माँ से पुनर्मिलन, टिंटु जोसी की कविता औरत, मार्च 25 अंक मे दिया नायर की कहानी जीवन साथी, सुजीत एस की कविता समय का सफ़र अनेक ऐसे अंश है जो वास्तव मे हमें बहुत कुछ सिखाते हैं। राजभाषा विभाग द्वारा समय समय पर अनेक आयोजन कंपनी की अन्य शाखाओं द्वारा हिंदी पखवाड़ा और गैर हिंदी भाषियों के लिए अनेक सार्थक प्रयास के लिए मैं राजभाषा विभाग को बधाई देती हूँ। मुझे अपने जीवन काल की अब तक की सबसे बडी उपलब्धि जो प्राप्त हुई वह है कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड के गैर सरकारी निदेशक के रूप में काम करने का अवसर। मैं स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करती हूँ कि अगले तीन वर्ष मैं आप से जुड़कर देश की सेवा करने का एक जरिया बन रही हूँ। सागर रत्न पत्रिका के संपादन मंडल को मैं बहुत ढेर सारी बधाई देती हूँ इतनी सुंदर, व्यवस्थित पत्रिका का संपादन करने के लिए। आप सभी को मेरी ओर से आने वाले सभी त्योहारों की बधाई के साथ।



सागर रत्न
मार्च 2025



डॉ सीमा सूरी
गैर सरकारी (स्वतंत्र) निदेशक



मौन.....

शब्द जब शोर लगने लगें
जब कह कर हम थकने लगें
जब कहने सुनने से मन भरने लगे
तब अच्छा लगता कौन...?
जब भावों का सागर कम पड़ जाए
बात जब कहीं पर आकर अड़ जाए
उलझन गहरी होकर और उलझे
लाख कोशिश करने पर भी न सुलझे
तब सबसे उत्तम होता मौन....
इसकी भी अपनी इक भाषा है
यह भी कह देने की ही परिभाषा है
शांत समंदर जैसे,गहरा होता है
ऐसे शब्दों का रेला ठहरा होता है
तब मन से मन को ही कहने दो
भावों को भी मन मे ही बहने दो
मौन ही सबसे बेहतर है जरिया तब
शब्दो का कम पड़ता हो दरिया जब
कुछ न बोलो,,अंतर्मन को कहने दो
मौन रहो बस,,बाकी सब रहने दो

छोटी छोटी बातें...

अक्सर बड़े एहसास से भरी होती हैं, छोटी छोटी बातें
किसी का कह देना, अच्छे लग रहे हो
या कुछ यूं, कि फब रहे हो
दो मीठे प्यार के बोल
कभी कभी होते हैं अनमोल
किसी का बस पूछ लेना ,कैसे हो
एक दर्द की दवा मिल जाने जैसा हो
फर्क पड़ता है जब कोई पूछे खाना खाया
ये छोटी सी बात समझा देती अपना ,पराया
सुबह सुबह संदेश ,रात ठीक से सोए?
क्या कहूँ कितनी खुशियां संग सजोए
तमाम ज़िंदगी बस दूसरो की फिकर
कोई तो हो जिसकी ये बाते करे असर
बहुत गहरे भाव लिए छोटी सी चिंता
अपनापन जो बांटे, नही वो फिर ये गिनता
बूंद बूंद से जैसे सागर भर जाता है
वैसे इनसे अंतर्मन भी गहराता है
फिर भी कह देने में करते जो
कंजूसी
इतराते अपने मे जैसे उनकी बात है दूजी
भूल रहे उनके भी प्याले हैं भर जाते
बड़े बड़े एहसास लिए, छोटी छोटी बातें.....



डॉ सीमा सूरी
गैर सरकारी (स्वतंत्र) निदेशक



मधुर- यादगार

सूने किनारे पर मिट्टी की वीणा लेकर मुग्ध रागों का वादन करते समय
तुम मुझ पर वारिस हो, कण्वाश्रम की शकुंतला की तरह

स्निग्ध कमल-मधु के जैसे, गुलाब- मुकुल की तरह
गर्मी की बरसात की तरह मेरे मन में मूकानुराग होकर उन्मीलित हो।

तुम मादकता की भावों से, मधुर सपने की तरह
मेरे उद्दीप्त मन में माया मयूर बनकर उन्माद मुग्ध नाट्य रचे हो।

कल्पना के नाव में सवार करते- करते दूर के किनारे पर
पहुँचने तक मुझ पर सदा भरपूर निमग्न हो।

राग होकर, स्वर-ताल बनकर मधु के रूप में सुगंध होकर
सप्त-स्वर जैसे मुझ पर एकांत स्निग्ध स्नेह गात हो उठे।



राधामणि ए पी
राहुलदास एस की माँ

सागर – रत्नों का भंडार

रत्नों से भरा है सागर
क्या सागर को है यह आभास ?
बार-बार निधि की तलाश में
लहराता हुआ आता है तट के पास।

सागर के रूप अनेक
क्या सागर को है यह आभास ?
कभी सिमटता, कभी सिकुड़ता
बुझाने को जूझता अपने दिल की प्यास।

आँखें हैं या असीम खाई
क्या सागर को है यह आभास ?
इनमें डूबकर खो जाए
कोई प्रेमी-प्रेमिका की जोड़ी खास।

मन की गहराई नापते नहीं नपती
क्या सागर को है यह आभास ?
यह उस कुएँ का है प्रतीक
जिसमें होता है सूक्ष्म विचारों का वास।

सागर की बालू से होते हैं लोग प्रेरित
क्या सागर को है यह आभास ?
पदचिह्नों का सौंदर्य देखते ही बनता है
चारों तरफ द्विपादों और चतुष्पादों का आवास।

है मानव और मानवता से प्रेम
क्या सागर को है यह आभास ?
द्वीप समूहों को सँजोए रखता है
करता है उनकी सुरक्षा, करते हुए अट्टहास।

अपनी बाहों में अनेकों आलिंगन
क्या सागर को है यह आभास ?
नाव, जहाज़ और पोतों को देता टहलने
अपने हृदय पर लेने देता उन्हें श्वास।

पशु-पक्षियों से भरसक प्रेम
क्या सागर को है यह आभास ?
कछुआ, शार्क, व्हेल, सीगल, वालरस
जैसे अनगिनत को जीवन देने का प्रयास।

उजाले और ऊर्जा का चालक
क्या सागर को है यह आभास ?
सूर्योदय और सूर्यास्त की सुंदरता से
भर देता यह दुनिया में मिठास।





कला पद्मनाभन
(कप्तान अनंतपद्मनाभन की सुपत्नी)



मूक शक्ति

मिसिलों के बीच में
सपने छुपे हुए हैं
टिप्पणियों की पंक्तियों में
मेरे प्रयास की ध्वनि हैं।

कोई ताली नहीं बजाता
इस मेज पर,
अनुक्रम और समय
मेरे हथियार है।

अनुमोदन मांग रही हूँ
प्रत्येक मिसिल सिखाई गई-
साहस है
शोर नहीं, बल्कि स्थिरता है।

छोटी त्रुटियाँ
जैसे- जैसे सबक बनते हैं,
व्यवस्थापक कक्ष में
मेरा विकास शुरू होता है।

कोई देख नहीं सकता
जैसे- जैसे चीज़े आगे बढ़ती हैं,
मैं मन में कहती हूँ-
"यह भी मेरी जीत है।"

चुपचाप,
बिल्कुल,
लगातार-
यह मेरा तरीका है।



सरिता एन के
सहायक प्रबंधक

समंदर के सिपाही



एम डी शोएब
परियोजना अधिकारी

नीले सागर की छाती चीर,
चलते हैं लोहे के ये वीर।
लहरों से जिनका नाता गहरा,
शिपिंग कहलाता उनका पहरा।

कच्चे माल से उपभोक्ता तक,
हर यात्रा की नींव है शिपिंग।
उद्योगों की निरंतरता,
राष्ट्रों की प्रतिस्पर्धा,
इन्हीं जहाज़ों पर निर्भर है।

तुफानों से टकरा कर भी,
रूकते नहीं ये जहाज़ कभी।
विश्व अर्थव्यवस्था की रीढ़ बने,
शिपिंग उद्योग के ताज कभी।

दुनियाँ की अर्थव्यवस्था
जिन रास्तों पर चलती है,
वे रास्ते नक्शों में नहीं,
समंदर में बनते है।

न दिखे चेहरे न सुर्खियाँ,
पर दुनिया चलती है जिनसे।
समंदर के उन सिपाहियों को
सलाम हमारे दिल से।

पुरस्कार और उपलब्धियाँ



समुद्री उत्कृष्टता पुरस्कार

भारत समुद्री सप्ताह 2025 के दौरान, सीएसएल को पोत निर्माण और मरम्मत के क्षेत्र में प्रतिष्ठित समुद्री उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

यह पुरस्कार भारत के पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय के माननीय केंद्रीय मंत्री श्री सर्बानंद सोणोवाल द्वारा श्री शांतनु ठाकुर, माननीय मंत्री, पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय (भारत) की उपस्थिति में प्रदान किया गया। यह पुरस्कार सीएसएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री मधु एस नायर ने ग्रहण किया।

यह सम्मान भारत के समुद्री क्षेत्र के प्रति सीएसएल की अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

स्वच्छता पखवाडा पुरस्कार 2025

स्वच्छता पखवाड़ा अभियान 2025 के दौरान स्वच्छता, साफ-सफाई एवं स्वच्छता संबंधी पहलों के प्रति कंपनी के निरंतर और सराहनीय प्रयासों को मान्यता देते हुए, पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड को स्वच्छ भारत पखवाड़ा पुरस्कार 2025 से सम्मानित किया गया। दिनांक 03 फरवरी 2026 को परिवहन भवन, नई दिल्ली में आयोजित पुरस्कार समारोह में सीएसएल की ओर से यह पुरस्कार श्री जोस वी.जे., निदेशक (वित्त) एवं अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (अतिरिक्त प्रभार) को प्रदान किया गया।



यह उपलब्धि संपूर्ण सीएसएल परिवार के लिए अत्यंत गर्व का विषय है और यह यार्ड के विभिन्न भौगोलिक स्थलों में स्वच्छता, साफ-सफाई तथा सतत कार्यस्थल प्रथाओं को बढ़ावा देने हेतु सीएसएल के सभी कर्मचारियों, विभागों, इकाइयों/सहायक कंपनियों, अनुबंध कर्मचारियों, प्रशिक्षुओं, यूनियनों तथा कोचीन शिपयार्ड क्वार्टर्स रेजिडेंट्स वेलफेयर एसोसिएशन के सामूहिक प्रयासों, प्रतिबद्धता और सक्रिय भागीदारी को प्रतिबिंबित करता है।



सर्वश्रेष्ठ स्टॉल - भारत समुद्री सप्ताह 2025

भारत समुद्री सप्ताह 2025 में सीएसएल को "सृजनात्मक दृश्य प्रस्तुति के लिए सर्वश्रेष्ठ स्टॉल" का पुरस्कार मिला। यह पुरस्कार माननीय केंद्रीय मंत्री द्वारा पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग राज्य मंत्री की उपस्थिति में प्रदान किया गया। सीएसएल की ओर से डॉ. हरिकृष्णन एस, निदेशक (प्रचालन) और श्री राजेष गोपालकृष्णन, निदेशक (तकनीकी) ने पुरस्कार ग्रहण किया।

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड को एफआईसीसीआई (फिक्की) सीएसआर पुरस्कार 2023-24

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड को दिनांक 6 अगस्त 2025 को नई दिल्ली स्थित एफआईसीसीआई फेडरेशन हाउस में आयोजित प्रतिष्ठित एफआईसीसीआई निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) पुरस्कार 2023-24 में विशेष कार्य निष्पादन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

यह पुरस्कार एफआईसीसीआई आदित्य बिरला सीएसआर सेंटर फॉर एक्सीलेंस की अध्यक्षा श्रीमती राजश्री बिरला द्वारा सीएसएल को अपनी नवीन और समावेशी सीएसआर पहलों के माध्यम से सामाजिक विकास में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया है।



समर्पण की जीत! सीएसएल एथलीटों ने राष्ट्रीय स्तर पर लहराया परचम.....

46वीं राष्ट्रीय मास्टर्स एथलेटिक चैंपियनशिप में सीएसएल का प्रतिनिधित्व करने वाले कर्मचारी-एथलीटों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए अनेक पदक अर्जित किए। इन खिलाड़ियों ने अपनी पेशेवर जिम्मेदारियों का सफलतापूर्वक निर्वहन करते हुए खेल के क्षेत्र में भी संगठन का गौरव बढ़ाया है।

पदक विजेताओं का विवरण

- श्रीमती नीता जोसफ - शॉटपुट : स्वर्ण पदक
- श्री जैक्सन सी. जे. - हाई जंप : स्वर्ण पदक
- विनु के. आर. - ट्रिपल जंप : रजत पदक
- मुरुगन ए. एम. - हैमर थ्रो : कांस्य पदक
- सिजार एम. बी. - पोल वॉल्ट : कांस्य पदक





तैराकी में कोचीन शिपयार्ड परिवार की शानदार उपलब्धि

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड को मास्टर पी. जे. जोहान जूलियन की उत्कृष्ट खेल उपलब्धियों पर गर्व है। मास्टर जोहान, श्री जूलियन जोस, सहायक प्रबंधक (यांत्रिकी) सीएसएल के सुपुत्र हैं।

केरल राज्य स्कूल तैराकी चैंपियनशिप 2025, जो तिरुवनंतपुरम में आयोजित हुई, में मास्टर जोहान ने शानदार प्रदर्शन करते हुए व्यक्तिगत स्पर्धाओं में एक स्वर्ण और दो रजत पदक, तथा रिले स्पर्धा में एक स्वर्ण पदक हासिल किया।

राष्ट्रीय स्तर पर, मास्टर जोहान ने नई दिल्ली में आयोजित 69वें राष्ट्रीय स्कूल खेलों में केरल का प्रतिनिधित्व करते हुए 50 मीटर फ्रीस्टाइल एवं बटरफ्लाई स्पर्धाओं में कांस्य पदक जीता।

विश्व हिंदी दिवस समारोह और वन्दे मातरम् के 150 वर्ष

युवा स्वर में राष्ट्र प्रेम की मधुर अभिव्यक्ति



प्रथम
सेक्रेड हार्ट कॉलेज



द्वितीय
मुथूट इंस्टीट्यूट ऑफ
टेकनॉलजी एंड साइंस





तृतीय
सेंट ज़ेवियर्स कॉलेज फॉर विमेन

राष्ट्रीय गीत वन्दे मातरम् के 150 वर्ष पूर्ण होने तथा विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड द्वारा एर्णाकुलम जिले के कॉलेजों केलिए "राष्ट्रीय गीत वन्दे मातरम्" प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम में जिले के 14 प्रतिष्ठित कॉलेजों ने भाग लिया, जिससे पूरा वातावरण देशभक्ति, उत्साह और सांस्कृतिक गरिमा से ओत-प्रोत हो गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन श्री सुबाष ए के, महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं अध्ययन विकास), सीएसएल द्वारा किया गया। अपने प्रेरणादायक संबोधन में उन्होंने वन्दे मातरम् के ऐतिहासिक और भावनात्मक महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह गीत केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि भारत की आत्मा और स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरक शक्ति है। उन्होंने यह भी कहा कि विश्व हिंदी दिवस हमें अपनी राष्ट्रभाषा के संरक्षण और प्रसार का दायित्व याद दिलाता है, क्योंकि हिंदी हमारे देश की सांस्कृतिक एकता का सशक्त माध्यम है।

प्रतियोगिता का मूल्यांकन एक प्रतिष्ठित निर्णायक मंडल द्वारा किया गया, जिसमें श्री संपत कुमार पी. एन., सलाहकार (सीएसआर), सुश्री रितु मोहन, प्राध्यापिका, आरएलवी कॉलेज, एर्णाकुलम तथा श्रीमती कार्तिका एस. नायर, प्रबंधक (वित्त) शामिल थीं। निर्णायकों ने प्रतिभागियों की प्रस्तुतियों का मूल्यांकन सुर, ताल, भावाभिव्यक्ति, मंच प्रस्तुतीकरण और देशभक्ति की भावना के आधार पर किया।





प्रतिभागियों ने वन्दे मातरम् की अत्यंत भावपूर्ण और मधुर प्रस्तुतियाँ दीं, जिसने श्रोताओं को गहराई से प्रभावित किया। प्रत्येक कॉलेज की प्रस्तुति में संगीतात्मक उत्कृष्टता के साथ-साथ राष्ट्र के प्रति समर्पण और श्रद्धा स्पष्ट रूप से झलक रही थी।





यह प्रतियोगिता अपने उद्देश्य को पूर्ण रूप से सफल बनाने में सक्षम रही। इसने युवाओं को अपनी प्रतिभा के माध्यम से देशभक्ति की भावना व्यक्त करने का एक सशक्त मंच प्रदान किया और वन्दे मातरम् की गौरवशाली परंपरा को नई पीढ़ी तक पहुँचाया। सीएसएल की इस पहल को प्रतिभागियों, शिक्षकों और दर्शकों ने अत्यंत सराहा, जिससे छात्रों में राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक गौरव और हिंदी भाषा के प्रति सम्मान की भावना और अधिक प्रबल हुई।

निर्णायक मंडल के निर्णय के अनुसार प्रथम पुरस्कार सेक्रेड हार्ट कॉलेज, तेवरा को प्रदान किया गया। द्वितीय पुरस्कार, मूथूट इंस्टीट्यूट ऑफ टेकनॉलजी एंड साइन्स, पुत्तनकुरिश को तथा तृतीय पुरस्कार सेंट ज़ेवियर्स कॉलेज फॉर विमेन, आलुवा को प्राप्त हुआ। विजेता टीमों को पुरस्कार और प्रमाणपत्र गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रदान कर सम्मानित किया गया।





हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025



सरकारी कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता बढाने और उसके प्रयोग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष सितंबर माह में कार्यालय में हिंदी पखवाडा आयोजित किया जाता है । दिनांक 14 सितंबर 2025 को गुजरात में आयोजित पांचवे अखिल भारतीय सम्मेलन में हिंदी दिवस समारोह का उद्घाटन किया गया । तदवसर पर, कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड का प्रतिनिधित्व करते हुए हिंदी कर्मियों ने अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की।

पखवाडे के दौरान, कर्मचारियों, कार्यपालक प्रशिक्षार्थियों, प्रशिक्षार्थियों केलिए विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे सुलेख, श्रुतलेख, समाचार वाचन, कविता पाठ, टिप्पण व आलेखन और अनुवाद, प्रशासनिक शब्दावली, कविता रचना, शब्द पहेली, प्रश्नोत्तरी, अंताक्षरी, नारा और पोस्टर और हिंदी फिल्म गीत (महिला और पुरुषों केलिए अलग - अलग), हस्ताक्षर प्रतियोगिता आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। हरेक प्रतियोगिता में 70 से अधिक कर्मचारियों ने पूरे दिल और जोश से भाग लिया ।



विशेष कार्यक्रम

हिंदी पखवाड़ा समारोह, 2025 के सिलसिले में और हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने तथा छात्रों में भाषा-आधारित वक्तृत्व और आलोचनात्मक चिंतन कौशल को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से, कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड, कोच्ची नगर निगम के अंतर्गत आने वाले स्कूलों के हाई स्कूल छात्रों (कक्षा 8, 9 और 10) के लिए हिंदी में वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कुल 12 स्कूलों ने प्रतियोगिता में सक्रिय रूप से अपनी भागीदारी सुनिश्चित की।

इस प्रतियोगिता का विषय था "युवाओं पर सोशल मीडिया का प्रभाव" जिसमें निर्णायक मंडल की भूमिका डॉ. मधुशील आयिल्यत्त, सहायक महाप्रबंधक, भारतीय रिज़र्व बैंक और डॉ. अजय जी. कमत, सहायक प्रोफसर, दि कोचीन कॉलेज ने निभाई । इस कार्यक्रम के ज़रिए छात्रों में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के महत्व को रेखांकित किया और उन्हें आत्मविश्वास के साथ अपने विचारों और दृष्टिकोण को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। प्रतियोगिता में क्रमश: नेवी चिल्ड्रन स्कूल, कोच्ची, चिन्मया विद्यालय, वडुतला, केंद्रीय विद्यालय नं.2 और ग्रीट्स पब्लिक स्कूल, कलूर ने प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चौथा पुरस्कार प्राप्त किया ।



प्रथम - नेवी चिल्ड्रन स्कूल



तृतीय - केंद्रीय विद्यालय नं.2



द्वितीय - चिन्मया विद्यालय



चौथा - ग्रीट्स पब्लिक स्कूल

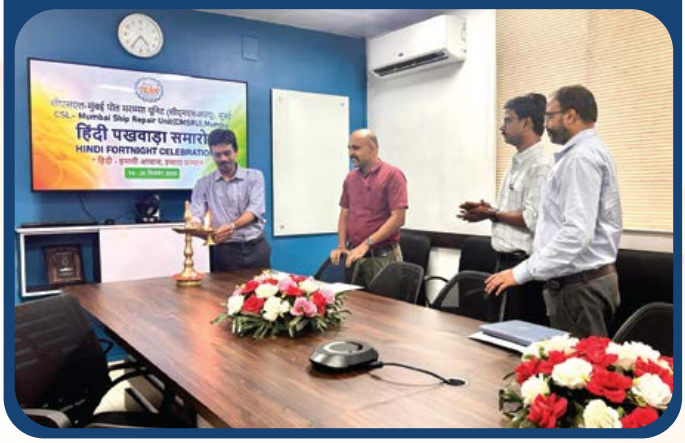




सीएसएल के अन्य यूनिटों में हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन

सीएसएल के अन्य यूनिट सीकेएसआरयू, सीएएनएसआरयू, सीएमएसआरयू में हिंदी पखवाड़ा समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर कर्मचारियों केलिए विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे सुलेख, कविता रचना, शब्द पहेली, फिल्मी गीत, प्रशासनिक शब्दावली आदि आयोजित की गई। सभी यूनिट के कर्मचारियों ने पूरे जोश और होश के साथ भाग लिया और कार्यक्रम को सफल बनाया।

सीएमएसआरयू



सीएएनएसआरयू



समापन समारोह

हिंदी पखवाड़ा समारोह का समापन समारोह दिनांक 21 नवंबर 2025, अपराह्न 1500 बजे को समुद्री इंजीनियरिंग प्रशिक्षण संस्थान (मेटी) के सभा भवन में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य कार्यस्थल में हिंदी के प्रयोग को बढावा देना और हिंदी भाषा के महत्व को उजागर करना था ।

मुख्य अतिथि के रूप में हमारे अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री मधु एस नायर ने समारोह को संबोधित किया। उनके साथ श्री हरिकृष्णन एस, निदेशक (प्रचालन) ने अपने आशीर्वचनों से सभा को संबोधित किया, श्री राजेष गोपालकृष्णन, निदेशक (तकनीकी) और श्री सुबाष ए के, महाप्रबंधक (मानव संसाधन व अध्ययन विकास) ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से समारोह की शोभा बढायी । समारोह का शुभारंभ श्रीमती अश्वती शाजी के ईश्वर वंदना के साथ शुरु हुआ जो कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड में हुए एक वर्ष की गतिविधियों के पवर पाइंट प्रस्तुतीकरण के साथ आगे बढ़ा । श्री संपत्तकुमार पी एन, सलाहकार (सीएसआर) ने स्वागत भाषण के ज़रिए वहां उपस्थित सभी का स्वागत किया ।





सीकेएसआरयू

कार्यक्रम के दौरान माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी का संदेश श्रीमती सरिता जी, प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा पढ़ा गया। तत्पश्चात हमारे अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री मधु एस नायर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में आयोजन समिति के प्रयासों की सराहना की और कर्मचारियों की सक्रिय भागीदारी की प्रशंसा की । अपने भाषण में, हिंदी के ज़रिए संचार में एकता और सहजता को बढाने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया । उनकी बातों में, हम सभी को हिंदी भाषा का अधिक से अधिक उपयोग करके, सही मायने में इसको सम्मान दिया जाना है। हिंदी पखवाडा समारोह के सिलसिले में कर्मचारियों केलिए और साथ ही स्कूली छात्रों केलिए वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन सफल ढंग से किया गया जो कि एक सराहनीय कदम है। इस समारोह में पुरस्कृत कर्मचारियों और स्कूली छात्रों को भी अध्यक्ष महोदय द्वारा सराहना दी गई। हिंदी भाषा को अपने प्रेरणात्मक शब्दों के साथ बढ़ावा देते हुए उन्होंने अपना भाषण संपन्न किया।



कार्यक्रम को एक छोटा-सा विराम देते हुए कुमारी रुद्रा साकेश, श्री साकेश के के की सुपुत्री ने अपने मधुर शब्दों में एक गीत प्रस्तुत की जिसने पूरे सभागार को अपने हाथों में ले लिया।

समापन समारोह के अवसर पर, सभी विजेता कर्मचारियों एवं शिल्पशाला में पुरस्कृत बच्चों साथ ही वाद-विवाद प्रतियोगिता में पुरस्कृत स्कूलों को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक और सभा में उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों के करकमलों से ट्रॉफी एवं प्रमाणपत्र प्रदान किया गया ।

हिंदी पखवाडा समारोह में राजभाषा के उत्कृष्ट निष्पादन हेतु चिकित्सा केंद्र को ट्रॉफी प्रदान किया गया। ओवरॉल चैम्पियनशिप रोलिंग ट्रॉफी इस वर्ष मानव संसाधन व अध्ययन विकास विभाग को प्रदान किया गया। इस पुरस्कार वितरण के तुरंत बाद एक और विराम लेते हुए हमारे फिल्मी गीत प्रतियोगिता में पुरस्कृत हुए श्री प्रवीण पी का गान प्रस्तुत किया गया जिसने सबके मन को मोह लिया उसको जारी रखते हुए श्रीमती सुमी एस और श्री आकाश मारुती गोंडे का एक युग्म गीत प्रस्तुत किया गया जो बहुत ही मनमोहक था ।

कार्यक्रम के अंत की ओर बढ़ते हुए हमारी प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती सरिता जी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया, जिन्होंने सभी प्रतिभागियों, आयोजकों और प्रबंधन को हिंदी पखवाडे के सफल बनाने में उनके सहयोग केलिए आभार व्यक्त किया । इसके बाद राष्ट्रगान के साथ समापन समारोह का भव्य संपन्न हुआ।

हिंदी पखवाड़ा समारोह का यह सफल आयोजन न केवल राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता बढ़ाने में सहायक रहा, बल्कि प्रतिभागियों में हिंदी के उपयोग के प्रति उत्साह भी उत्पन्न हुआ । साथ ही यह समारोह कर्मचारियों में हिंदी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित किया। समापन समारोह के माध्यम से सभी ने यह संकल्प लिया कि वे अपने दैनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को और अधिक बढ़ावा देंगे। कार्यक्रम उत्साह, अनुशासन और सहयोग के साथ संपन्न हुआ।



राजभाषा उत्कृष्टता पुरस्कार - चिकित्सा केंद्र









ओवरॉल चैम्पियनशिप रोलिंग ट्रॉफी -मानव संसाधन एवं अध्ययन विकास विभाग

राजभाषा प्रबंधन कार्यक्रम





भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन, हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने तथा कार्यपालकों को राजभाषा संबंधी प्रावधानों से अवगत कराने के उद्देश्य से दिनांक 03.12.2025 को वरिष्ठ प्रबंधकों और प्रबंधकों के स्तर में "राजभाषा प्रबंधन कार्यक्रम" का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक उपयोग को बढ़ावा देना, राजभाषा नियमों का पालन सुनिश्चित करना तथा कार्यपालकों में राजभाषा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना था। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मधुशील आयिल्यत्त, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), भारतीय रिज़र्व बैंक, कोच्ची द्वारा किया गया। संयोजक ने कार्यक्रम का उद्देश्य एवं महत्व पर विस्तृत जानकारी दी। राजभाषा नीति का संक्षिप्त परिचय पवर पाइंट प्रस्तुतीकरण द्वारा दिया गया। टिप्पण व आलेखन के व्यावहारिक उदाहरण प्रस्तुत किए गए। पत्राचार, ई-मेल, कार्यालयीन दस्तावेज़ आदि में हिंदी प्रयोग की विधियां समझाई गईं। हिंदी प्रपत्रों का उपयोग, कंप्यूटर पर हिंदी टाइपिंग की स्थिति आदि पर चर्चा की गई। संसदीय समिति में आने वाली समस्याओं का समाधान आदि पर भी चर्चा की गई। प्रतिभागियों के लिए हिंदी फॉन्ट एवं टाइपिंग सुविधाओं का परिचय, अनुवाद उपकरणों का उपयोग, मोबाइल में ज़रिए विभिन्न हिंदी एपों का परिचय आदि कराया गया।

राजभाषा प्रबंधन कार्यक्रम अत्यंत सफल एवं प्रभावी रहा। इस कार्यक्रम ने कार्यपालकों में हिंदी के प्रयोग के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया तथा कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा के उपयोग में वृद्धि हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए गए। ऐसे कार्यक्रमों के नियमित आयोजन से संस्थान में राजभाषा नीति का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित होगा और हिंदी के प्रयोग को और अधिक सुदृढ़ आधार प्राप्त होगा। सभी 33 कार्यपालकों ने सक्रिय रूप से राजभाषा प्रबंधन कार्यक्रम में भाग लिया और अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त की।

सीएसएल के नव नियुक्त कार्यपालक प्रशिक्षार्थियों केलिए हिंदी कार्यशाला



जुलाई-सितंबर तिमाही की एक दिवसीय कार्यशाला कार्यालय में नव नियुक्त कार्यपालक प्रशिक्षार्थियों केलिए दिनांक 13.08.2025 को आयोजित की गई । कार्यशाला में मुख्य रूप से राजभाषा हिंदी का महत्व, राजभाषा नीति, वार्षिक कार्यक्रम, राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित जिम्मेदारियों पर प्रकाश डाला गया । सभी 38 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से कार्यशाला में भाग लिया ।

कॉलेज छात्रों केलिए इंटर्नशिप कार्यक्रम

कॉलेज छात्रों के बीच राजभाषा हिंदी और कार्यालयीन कार्यों से परिचित कराने के उपलक्ष्य से कोचीन शिपयार्ड में इंटर्नशिप कार्यक्रम प्रारंभ किया गया । जुलाई-दिसंबर 2025 के दौरान 6 छात्रों ने हिंदी प्रचार सभा, कोच्ची से और 2 छात्रों ने कोचीन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कोच्ची से इंटर्नशिप कार्यक्रम सफल रूप से पूरा किया । उन्हें राजभाषा नीति, वार्षिक कार्यक्रम, पत्राचार, टिप्पण व आलेखन, कंप्यूटर में टाइपिंग, रिकॉर्ड / फाइल प्रबंधन आदि में ज्ञान प्राप्त करने का सुअवसर मिला ।

अमृता विश्वविद्यापीठम, कोच्ची कैंपस में हिंदी प्रतियोगिताओं केलिए प्रायोजन





अमृता विश्वविद्यालय, कोच्ची कैंपस में आयोजित हिंदी पखवाड़ा समारोह के अंतर्गत एर्णाकुलम जिले के विभिन्न कॉलेजों के विद्यार्थियों के लिए आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं (हिंदी कविता पाठ, भाषण और निबंध लेखन) को कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड द्वारा प्रायोजित किया गया, जिसका उद्देश्य युवाओं में हिंदी भाषा के प्रति रुचि बढ़ाना, उनकी रचनात्मक एवं भाषाई प्रतिभा को प्रोत्साहित करना तथा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को सुदृढ़ करना था। ये हिंदी प्रतियोगिताएँ न केवल विद्यार्थियों की भाषाई प्रतिभा को उजागर करने का मंच बनीं, बल्कि हिंदी के प्रचार-प्रसार और सांस्कृतिक चेतना को सुदृढ़ करने में भी महत्वपूर्ण सिद्ध हुईं। कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड के सहयोग से यह आयोजन और अधिक प्रभावशाली एवं सुव्यवस्थित रहा, जिसने युवा पीढ़ी में हिंदी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और आत्मविश्वास विकसित किया।

कर्मचारियों केलिए विशेषीकृत हिंदी टिप्पण व आलेखन प्रशिक्षण



कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कार्यालय में दिनांक 18.11.2025 को अक्तूबर-दिसंबर 2025 तिमाही केलिए, विशिष्ट हिंदी टिप्पण एवं आलेखन पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य सरकारी एवं प्रशासनिक कार्यों में सामान्यतः प्रयुक्त हिंदी टिप्पण, आलेखन एवं कार्यालयीन पत्राचार में कर्मचारियों की दक्षता बढ़ाना था। सत्र का संचालन श्रीमती लिजा जी.एस., सहायक प्रशासनिक अधिकारी (हिंदी-वरिष्ठ ग्रेड) ने किया, जिन्होंने राजभाषा नियमों, शुद्ध लेखन तकनीकों एवं कार्यालयीन संचार से संबंधित व्यावहारिक कार्यों पर विस्तृत मार्गदर्शन प्रदान किया। कार्यशाला में कुल 21 कर्मचारियों ने भाग लिया और सभी प्रशिक्षण गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया। इस कार्यक्रम ने कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया ।

हिंदी गृह पत्रिका- सागर रत्न का विमोचन



हिंदी गृह पत्रिका के 18वें अंक का विमोचन सितंबर, 2025 को सीएसएल में हिंदी पखवाडा समारोह के दौरान किया गया।

हिंदी प्राज्ञ प्रशिक्षण



राजभाषा कार्यान्वयन कार्यक्रम के अंतर्गत कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड द्वारा अपने कर्मचारियों के लिए प्राज्ञ कक्षा का आयोजन किया गया। उक्त कक्षा में कुल 20 कर्मचारियों ने नामांकन किया। कक्षा की अंतिम परीक्षा दिनांक 16 नवंबर 2025 को आयोजित की गई, जिसमें सभी कर्मचारी सफलतापूर्वक उत्तीर्ण हुए।

कोच्ची टॉलिक - अर्ध वार्षिक बैठक

कोच्ची टॉलिक की अर्धवार्षिक बैठक दिनांक 27 अक्तूबर 2025 को बीएसएनएल भवन, कोच्ची में आयोजित की गई । बैठक के दौरान सदस्य सचिव ने सभी कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा की । कोचीन शिपयार्ड द्वारा किए गए सभी प्रयासों की सराहना की गई। बैठक में कोचीन शिपयार्ड की ओर से श्री सुबाष ए के, महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं अध्ययन विकास) और हिंदी कर्मियों ने भाग लिया ।

विविध गतिविधियां

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अपने स्वर्णिम जयंती समारोह के सिलसिले में दिनांक 10.07.2025 को हैदराबाद में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड का प्रतिनिधित्व करते हुए श्रीमती सरिता जी, प्रबंधक और श्रीमती लिजा जी एस, सहायक प्रशासनिक अधिकारी ने अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की।

सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रगतिशील प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु चालू पहलों के अंतर्गत, दिनांक 7 अगस्त 2025 को एचओसीएल में एक राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड की श्रीमती लिजा जी एस, सहायक प्रशासनिक अधिकारी और श्रीमती आतिरा आर एस, हिंदी टंकक ने इस संगोष्ठी में सक्रिय रूप से भाग लिया।

श्रीमती लिजा जी एस, सहायक प्रशासनिक अधिकारी (वरिष्ठ ग्रेड - हिंदी) द्वारा दिनांक 13.11.2025 को भारतीय रिज़र्व बैंक, कोच्ची के कर्मचारियों केलिए कार्यशाला का संचालन किया। इस कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों के राजभाषा कार्यान्वयन में कौशल और ज्ञान को बढ़ाना था।

प्रशासनिक शब्दावली



1	प्रचलित नियमों के अनुसार	According to the rules in vogue
2	पद की हैसियत, कार्य करते हुए	Acting in official Capacity
3	प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त किया जाए	Administrative approval may be obtained
4	लेखन- सामग्री की खरीद केलिए अग्रिम मंजूर किया जाए	Advance for purchase of stationery may be sanctioned
5	कृपया यात्रा भत्ते के अग्रिम की व्यवस्था करें	Advance of T.A. may please be arranged
6	आगे की प्रगति से अवगत कराएं	Advise further development
7	मामले के सभी पहलुओं पर विचार करने के बाद	After taking into consideration all aspects of the issue
8	हाशिए की अभ्युक्ति के अनुसार अनुमोदित	Approved as per remarks in the margin
9	रिपोर्ट समय पर प्रस्तुत करने की व्यवस्था की जा रही है।	Arrangements are being made to ensure timely submission of report
10	वर्तमान आदेशों के अनुसार	As per extant orders
11	सरकारी आदेश की प्रभावी तारीख से पूर्व	Before the effective date of Govt. Order
12	निर्धारित समय से पीछे या के बाद	Behind Schedule
13	कार्यभार सौंप दिया	Charge handed over
14	पेंशन का संराशीकरण	Commutation of pension
15	सकल वेतन से कटौती	Deductions from gross salary
16	शीघ्र आदेश देने की कृपा करें	Early orders are solicited
17	प्रशासनिक कार्य की तात्कालिक आवश्यकताएं	Exigencies of administrative work
18	संबंधित कर्मचारियों से स्पष्टीकरण मांगा जाए	Get clarification of the staff concerned
19	मामले की संवीक्षा की जा रही है	Matter is being scrutinized
20	पेंशन की आनुपातिक घटौती	Proportionate reduction of pension
21	पक्ष-विपक्ष	Pros and cons
22	मरम्मत योग्य उपस्कर	Repairable equipment
23	समय पर अनुपालन सुनिश्चित कर लिया जाए	Timely compliance may be ensured
24	प्रतीक्षा सूची को नवीकृत किया जाए	Waiting list may be renewed
25	प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना	Without prejudice
26	आपका अनुरोध स्वीकार किया जाता है।	Your request is granted

दुल्हन, दूल्हा, प्रेमी तथा चोर

एक नौजवान युवक मदन सेना से बहुत प्यार करता था और कसम खाता है , कि अगर वह अगली पूर्णिमा को उससे मिलने नहीं आई तो वह अपनी जान दे देगा। इस बीच, मदन सेना के माता-पिता उसकी शादी तय कर देते हैं और उस मनहूस दिन (पूर्णिमा) से पहले ही उसकी शादी एक दूसरे आदमी से हो जाती है। वह अपने पति के साथ रहने लगती है और एक दिन दो चोर उसके नए घर में कुछ कीमती सामान चुराने की उम्मीद में घुसते हैं। चोरों में से एक मदन सेना को देखता है और उसकी खूबसूरती से प्रभावित होकर उम्मीद करता है कि एक दिन वह भी उस जैसी किसी लड़की से शादी करके बस जाएगा।

जल्द ही वह मनहूस दिन (पूर्णिमा) आ जाता है, और मदन सेना को डर लगता है कि उसका प्रेमी सच में अपनी जान न दे दे, इसलिए वह उससे मिलने का फैसला करती है। वह अपने पति से इजाज़त मांगती है, जो उसे हैरानी की बात है कि शादी की पहली रात को ही उस आदमी से मिलने जाने देता है। हालांकि, पति अपना भेष बदलकर तलवार लेकर थोड़ी दूरी से उसका पीछा करता है। प्रेमी से मिलने के रास्ते में, वह उस चोर से मिलती है जो उससे कहता है कि चूंकि उसने अपना शादीशुदा घर छोड़ दिया है, इसलिए अब वह उसकी है। हालांकि, वह प्रेमी से मिलने की भीख मांगती है और उसे इस शर्त पर जाने दिया जाता है कि वह जल्द ही उसके पास वापस आ जाएगी। फिर वह प्रेमी से मिलती है जिसे विश्वास नहीं होता कि मदन सेना ने अपना वादा निभाया। हालांकि, उसके सिर पर सिंदूर देखकर उसे एहसास होता है कि अब उसकी शादी हो गई है। नतीजतन, प्रेमी मदन सेना को छोड़ने का फैसला करता है क्योंकि अब उसकी शादी किसी और से हो गई है और वह इस पाप में शामिल नहीं होगा।

वापस आते समय वह वादे के मुताबिक चोर से मिलती है, और वह दोनों आदमियों की असाधारण कहानियाँ सुनकर हैरान रह जाता है। वह इन कहानियों से इतना प्रभावित होता है कि वह अपनी बुरी इच्छा के खिलाफ जाकर मदन सेना को जाने देने का फैसला करता है।

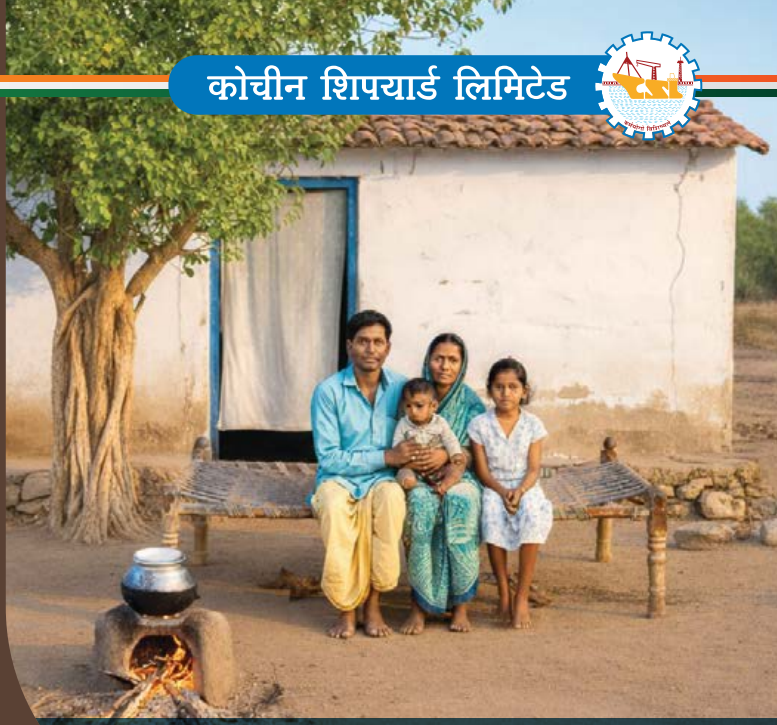
प्रश्न : तीनों में से (पति ,प्रेमी या चोर) किसका बलिदान अधिक हैं ???

उत्तर : चोर का (क्योंकि वह उसकी जीविका छोड़कर उस दुल्हन को जाने देता हैं)



मोहम्मद कादर शेख
आउटफिट सहायक

चार परछाइयों के बीच की जगह



तिरुवनंतपुरम नराकास द्वारा दक्षिणी नराकासों के बीच आयोजित हिंदी लघु कथा प्रतियोगिता में पुरस्कृत लेख

फोटो दोपहर में ली गई थी, जब सूरज ठीक सिर के ऊपर होता है और ज़मीन पर परछाइयाँ लगभग दिखाई नहीं देती। लेकिन वर्षों बाद, जब मीरा ने उस तस्वीर को फिर से देखा, तो उसे लगा कि उसमें चार परछाइयाँ है, पर वे चार लोगों की नहीं बल्कि उन लम्हों की थी जो अनकहे और अधूरे रह गए थे।

चारों आँगन के बीच रखी बुनी हुई चारपाई पर करीब बैठे थे। नीचे की ज़मीन सूखी और दरारों से भरी थी, पीछे पुराना घर खड़ा था और पास ही चुल्हे पर रखा काला बर्तन हल्का सा धुआँ छोड रहा था, जैसे दोपहर खुद एक लंबी साँस ले रही हो। फोटोग्राफर ने कहा था, "स्वाभाविक होकर बैठो।"

लेकिन स्वाभाविक होना शायद सबसे कठिन बात होती है। आदमी थोड़ा आगे झुका बैठा था, जैसे वह वर्षों से कोई अदृश्य बोझ उठाता आए हो। उसकी मुस्कान आदत की तरह थी। और वह महिला, माँ सीधी बैठी थी- शांत और स्थिर। उसकी साड़ी का रंग अब वादे से ज्यादा स्मृति जैसा था। उसकी आंखों में उस इंसान की शांति थी जिसने बोलने से ज्यादा सुनना सीख लिया हो।

उसकी गोद में एक छोटा बच्चा बैठा था। सुरक्षा की तलाश में सिमटा हुआ। दूसरी ओर बड़ी बच्ची थी, जिसकी मुकसान चौड़ी थी, पर लापरवाह नहीं- वह सब कुछ देख रही थी, लेकिन समझ नहीं पा रही थी।

तस्वीर ने उन्हें साथ और पूरे होने का आभास दिया। पर सच उनके बीच की उस जगह में थी।

उस दोपहर आदमी सामान्य समय से पहले घर लौटा था। उसकी कमीज़ पसीने से भीगी थी। उसने कहा था कि काम में वक्त लग सकता है, पर शायद सब ठीक हो जाए। माँ ने बस सिर हिलाया। बड़ी बच्ची ने पूछा, "तो क्या आप कल नहीं जाओगे?, "जाऊंगा" उसने कहा, "पर शायद ज्यादा देर केलिए नहीं।" अगले दिन वह चला गया।

बडी बच्ची को इंतज़ार याद है- माँ का बिना गुनगुनाए खाना बनाना, चुल्हे पर उबलता बर्तन और वह एहसास जब बचपन चुपचाप खत्म हो गया। छोटे बच्चे को तस्वीर याद नहीं, उसे बदला हुआ घर, अलग-अलग कमरे और धीमे हाथों वाली माँ याद है। उसे बहन की देर रात तक पढ़ाई और अधूरे जवाब याद है।

"वह कहाँ है?"
"दूर काम कर रहे हैं"
"कब आएँगें?"
"जब आ सकेंगे"
बच्चे बहुत जल्दी सीख जाते है कि "कब" का मतलब अक्सर कभी नहीं होता है।

उस महिला को सब कुछ याद था। वह दिन भी जब खबर आई थी, और वह चुप्पी भी जो रोने से कहीं ज़्यादा भारी थी। दुख हर बार शोर नहीं करता, कभी- कभी वह बस साथ चलता है।

तस्वीर वर्षों तक छुपी रही- दर्द के कारण नहीं, बल्कि उसकी ताकत के कारण। जब बड़ी बच्ची ने उसे अपने घर की दीवार पर टाँगा तो, उसने देखा- आदमी आगे की ओर झुका था, महिला केंद्र बनकर बैठी थी, छोटा बच्चा भीतर की ओर, और वह स्वयं बाहर की ओर, भविष्य की तरफ।
वे सिर्फ परिवार नहीं थे।
वे दिशाएँ थे।

अब आँगन बदल चुका है, चारपाई की जगह नया फर्नीचर आ गया है। पर उन चार परछाइयों के बीच की जगह अब भी मौजूद है- खाली नहीं, बल्कि उन सब बातों से भरी हुई जो जिए गए, खोए गए और चुपचाप आगे बढ़ा दिए गए।
और शायद वही सबसे सच्ची तस्वीर है।



हरिकृष्णन जी
प्रबंधक

एक साधारण वस्तु, एक असाधारण क्षण

यात्रा अक्सर हमें वे बातें सिखा देती है, जिन्हें सीखने की हमने कभी योजना ही नहीं बनाई थी।

इस वर्ष मैं और मेरे पति सिंगापुर घूमने गए थे-एक ऐसा शहर जो अपनी सुव्यवस्थित सुंदरता और अंतहीन वॉकिंग ट्रेल्स के लिए जाना जाता है। दिन ट्रेन, बस और टैक्सी की यात्राओं में बीतते गए; लंबी सड़कें, तरह-तरह के खाने-पीने और मनमोहक दृश्यों की एक लय-सी बन गई थी। हर यात्री की तरह, मेरे कंधे पर भी एक बैकपैक था। उस बैकपैक में- लगभग भूली-बिसरी- भारत से लाई गई पारले-जी बिस्कुट की एक छोटी- सी पैकेट थी। वह पूरे सफ़र में मेरे साथ रही, बिना किसी उद्देश्य के मीलों का सफ़र तय करती रही। कई बार यह सोचकर मेरे चेहरे पर मुस्कान आ जाती थी कि यह बिस्कुट मेरे साथ सिंगापुर घूम रहा है।

आख़िरी दिन, जब हम अगले गंतव्य के लिए बस में चढ़ने के इंतज़ार में भीड़ के बीच खड़े थे, तभी यात्रा अचानक थम- सी गई। पास खड़े एक व्यक्ति को अचानक चक्कर आ गया और वह गिरने ही वाला था। उसके बड़े से परिवार में घबराहट फैल गई। उनका शुगर लेवल गिर गया था, और वे आसपास के लोगों से कुछ मीठा देने की गुज़ारिश करने लगे।

कुछ भी नहीं था - न जेबों में, न बैगों में।

और तभी मुझे वह बिस्कुट याद आया।

उस पल समय जैसे बदल गया था। बढ़ते तनाव के बीच मेरा हाथ बैकपैक में बिस्कुट ढूँढता रहा। कुछ सेकंड तक वह नहीं मिला। फिर अचानक- वह मिल गया वह वहीं पर था। बिस्कुट उन्हें दे दिया गया और धीरे-धीरे उस व्यक्ति की हालत संभलने लगी। उसका परिवार वहीं रुक गया, बिस्कुट पकड़े हुए, उसे संभलते हुए देखता रहा, जबकि बस चलने लगी।

हमें उस बस में चढ़ना ज़रूरी था, नहीं तो अगली कनेक्टिंग बस छूट जाती।

जैसे-जैसे बस आगे बढ़ी, हम बार-बार पीछे मुड़कर उसे और उसके परिवार को देखते रहे। आज मुझे उसका चेहरा याद नहीं है, न ही हमारे बीच "धन्यवाद" जैसे कोई शब्दों का आदान-प्रदान हुआ। लेकिन वह छोटा-सा, साधारण बिस्कुट- जो बिना किसी इरादे के देशों के पार सफ़र करता रहा था- उस क्षण अपना उद्देश्य पा गया।

यात्राओं से हम आमतौर पर यादगार चीज़ें अपने साथ घर लाते हैं। यह यादगार वहीं पीछे रह गई- एक सीख बनकर।

कभी-कभी हमारे पास सबसे अर्थपूर्ण चीज़ें वही होती हैं, जिन्हें हम सोच-समझकर नहीं रखते। वे छोटी होती हैं, अनदेखी और शांत। लेकिन सही समय पर, वही सबसे बड़ा अंतर पैदा कर सकती हैं- कभी-कभी तो किसी की जान भी बचा सकती हैं।



सुमी एस
प्रबंधक







वन्दे मातरम् - 150 वर्ष

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड ने राष्ट्र के साथ मिलकर 'वन्दे मातरम्' के 150 वर्ष पूरे होने का स्मरण किया। 'वन्दे मातरम्' वह कालजयी राष्ट्रगीत है, जिसने भारत में एकता और आत्मबल की भावना को जागृत किया।

इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर चिंतन करते हुए, सीएसएल भक्ति, शक्ति और सामूहिक उद्देश्य जैसे उन शाश्वत मूल्यों को नमन करता है, जो निरंतर हमारे राष्ट्र की प्रगति का मार्गदर्शन करते आ रहे हैं।



संविधान दिवस

सीएसएल ने भारत के संविधान में निहित मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हुए संविधान दिवस मनाया। केरल उच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीश श्री मोहम्मद नियास सी.पी. ने मुख्य अतिथि के रूप में समारोह की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम की अध्यक्षता सीएसएल के सीएमडी श्री मधु एस. नायर ने की, तथा इसमें निदेशकगण, सीवीओ एवं सीएसएल के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।



खेल दिवस सह फिट इंडिया

सीएसएल ने दिनांक 29 अगस्त 2025 को राष्ट्रीय खेल दिवस "खेल दिवस सह फिट इंडिया" का आयोजन किया, जिसमें महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद को गर्व के साथ स्मरण किया गया। इस अवसर पर शपथ का आयोजन श्री वी. जे. जोस, निदेशक (वित्त) द्वारा किया गया। इसके पश्चात सीआईएसएफ कर्मियों एवं सीएसएल स्पोर्ट्स क्लब के सदस्यों के नेतृत्व में फ्लैग मार्च किया गया। इस दिन सीएसएल के उन खेल चैंपियनों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, राज्य एवं जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर गौरव प्राप्त किया।





ऊर्जा संरक्षण सप्ताह

सीएसएल ने दिनांक 8 से 16 दिसंबर 2025 तक ऊर्जा संरक्षण सप्ताह 2025 का आयोजन किया, जिसमें उसने सतत ऊर्जा प्रथाओं के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया। इस सप्ताह के दौरान कई प्रतियोगिताएं और जागरूकता गतिविधियां आयोजित की गईं, जिनमें सभी कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जिससे पूरे संगठन में ऊर्जा के जिम्मेदार उपयोग की संस्कृति को बढ़ावा मिला।

सीएसएल द्वारा आयोजित ऊर्जा संरक्षण सप्ताह समारोह का समापन दिनांक 16 दिसंबर 2025 को प्रशिक्षण संस्थान के सभा भवन में जागरूकता कार्यक्रम और पुरस्कार वितरण समारोह के साथ हुआ। स्वतंत्र सलाहकार और कॉर्पोरेट प्रशिक्षक श्री नायर नंदकुमार ने "ऊर्जा संरक्षण द्वारा भविष्य की सुरक्षा" विषय पर व्याख्यान दिया।





सतर्कता जागरूकता सप्ताह - 2025

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड ने दिनांक 27 अक्तूबर 2025 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 का आयोजन किया, जिसके माध्यम से पारदर्शिता, ईमानदारी और नैतिक प्रशासन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया गया। यह आयोजन केंद्रीय सतर्कता आयोग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुरूप, ''सतर्कता हमारी साझा जिम्मेदारी'' विषय के अंतर्गत किया गया।

आयोजन के अंतर्गत ईमानदारी शपथ का वाचन श्री जोस वी. जे., निदेशक (वित्त) द्वारा कराया गया, जिसमें कर्मचारियों ने अपने आधिकारिक दायित्वों के निर्वहन में ईमानदारी, निष्पक्षता और पारदर्शिता के उच्चतम मानकों का पालन करने का संकल्प लिया। विभिन्न विभागों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने शपथ ग्रहण कर स्वच्छ और उत्तरदायी प्रशासन में योगदान देने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की।

कोचीन शिपयार्ड की ऐतिहासिक छलांग





एक ही दिन, तीन अत्याधुनिक पोत — भारत की समुद्री शक्ति का नया अध्याय

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड ने दिनांक 18 अक्तूबर 2025 को भारतीय समुद्री इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय जोड़ दिया। इस दिन सीएसएल ने एक साथ तीन अत्याधुनिक और तकनीकी रूप से भिन्न पोतों का जलावतरण कर बढ़ती समुद्री क्षमता, तकनीकी आत्मनिर्भरता और हरित भविष्य की दिशा में ठोस कदम का प्रदर्शन किया।

यह उपलब्धि केवल पोत निर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह रक्षा, अवसंरचना और नवीकरणीय ऊर्जा–तीनों क्षेत्रों में भारत की सशक्त उपस्थिति को रेखांकित करती है।





तीनों जलयान: शक्ति, संरचना और स्थिरता का संगम

1. आईएनएस मगदाला: तटों का प्रहरी

भारतीय नौसेना के लिए निर्मित एंटी-सबमरीन वॉरफेयर शैलो वाटर क्राफ्ट श्रेणी का यह छठा पोत है।

- पनडुब्बी रोधी अभियानों के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन
- तटीय जलक्षेत्र की सुरक्षा और माइन बिछाने में सक्षम
- पूर्णतः स्वदेशी डिज़ाइन, जो रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत को बल देता है

2. डीसीआई ड्रेज गोदावरी: गहराई से विकास तक

डीसीआई ड्रेज गोदावरी भारत का अब तक का सबसे बड़ा ट्रेलर सक्शन हॉपर ड्रेजर है।

- पत्तनों की गहराई बढ़ाने, नौवहन सुधार और भूमि पुनर्भरण में उपयोगी
- रॉयल आईएचसी, नेथरलैंड के तकनीकी सहयोग से निर्मित
- भारत की समुद्री अवसंरचना और व्यापार क्षमता को नई ऊँचाई

3. 'ग्रीन विजिल': हरित समुद्र की ओर कदम

भारत का पहला हाइब्रिड-इलेक्ट्रिक कमीशनिंग सर्विस ऑपरेशन जलयान (सीएसओवी), जो ऑफशोर पवन ऊर्जा परियोजनाओं के लिए तैयार किया गया है।

- पर्यावरण अनुकूल, कम उत्सर्जन तकनीक
- समुद्र में कार्यरत तकनीशियनों के लिए 'फ्लोटिंग होटल' की सुविधा
- भारत के नवीकरणीय ऊर्जा भविष्य का समुद्री आधार

कोचीन शिपयार्ड का यह ऐतिहासिक कदम केवल पोतों का जलावतरण नहीं, बल्कि भारत की समुद्री महाशक्ति बनने की यात्रा का स्पष्ट संकेत है। यह उपलब्धि आने वाले वर्षों में भारत को रक्षा, व्यापार और हरित ऊर्जा के क्षेत्र में और अधिक सशक्त बनाएगी।





भारतीय नौसेना को पहला पनडुब्बी रोधी युद्धक उथले जलयान 'माहे' का समर्पण





कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड (सीएसएल), कोच्ची द्वारा स्वदेशी रूप से डिज़ाइन और निर्मित, आठ पनडुब्बी रोधी युद्धक उथले जलयानों (एएसडब्ल्यू एसडब्ल्यूसी) में से पहला, 'माहे' दिनांक 23 अक्तूबर को भारतीय नौसेना को सौंपा गया। स्वीकृति पत्र पर कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड के निदेशक (प्रचालन) डॉ. एस हरिकृष्णन और माहे के कमान अधिकारी (नामित) कमान अमित चंद्र चौबे के बीच हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर पश्चिमी नौसेना कमान के सीएसओ (तकनीकी) रियर एडमिरल आर आधि श्रीनिवासन, कोच्ची के युद्धपोत उत्पादन अधीक्षक कमोडोर अनूप मेनन और भारतीय नौसेना तथा सीएसएल के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

इस युद्धपोत का डिज़ाइन और निर्माण डेट नॉर्स्के वेरिटास (डीएनवी) के वर्गीकरण नियमों के अनुसार किया गया है। 78 मीटर लंबा यह युद्धपोत डीज़ल इंजन वॉटरजेट संयोजन द्वारा संचालित भारतीय नौसेना का सबसे बड़ा युद्धपोत है। इस पोत को पानी के भीतर निगरानी, खोज एवं बचाव कार्यों और कम तीव्रता वाले समुद्री अभियानों (लिमो) के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह पोत तटीय जल में उन्नत बारूदी सुरंग बिछाने की क्षमताओं के साथ-साथ पनडुब्बी रोधी संचालन करने में सक्षम है। पनडुब्बी रोधी युद्ध पोतों के शामिल होने से भारतीय नौसेना की उथले पानी में पनडुब्बी रोधी युद्ध क्षमताओं में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

माहे की सुपुर्दगी भारतीय नौसेना की स्वदेशी पोत निर्माण की खोज और 90% से अधिक स्वदेशी सामग्री के साथ "आत्मनिर्भर भारत" के सरकार के दृष्टिकोण को कायम रखने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

समुद्र पार भारत की कारीगरी: कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड ने जर्मनी को सौंपा अत्याधुनिक बहु-उद्देशीय जलयान

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड ने जर्मनी की कंपनी एचएस शिफ़फ़ार्ट्स यूजी एंड कंपनी केजी को अपना पहला बहु-उद्देश्शीय जलयान सफलतापूर्वक सौंप दिया है। इस जलयान का नाम एमएस 'हाइंज़' रखा गया है और यह एचएस इकोफ्राइटर श्रृंखला का पहला पोत है।

यह जलयान 12 जनवरी 2026 को आधिकारिक रूप से सुपुर्द किया गया । इसका डिज़ाइन नीदरलैंड की ग्रूट शिप डिज़ाइन कंपनी ने तैयार किया है और इसे डीएनवी वर्गीकरण मानकों के अनुसार बनाया गया है।

जलयान की प्रमुख विशेषताएँ:

- यह एक आधुनिक बहु-उद्देशीय मालवाहक जलयान है ।
- कंटेनर, स्टील कॉइल, लकड़ी, काग़ज़ और ड्राई बल्क जैसे विभिन्न प्रकार के कार्गो ढोने में सक्षम
- पर्यावरण-अनुकूल और ईंधन-कुशल डिज़ाइन

यह सुपुर्दगी कोचीन शिपयार्ड के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा रही है, क्योंकि इससे अंतरराष्ट्रीय वाणिज्यिक जलयान निर्माण बाज़ार में भारत की मौजूदगी और मज़बूत हुई है। यह परियोजना भारत की पोत निर्माण क्षमताओं और वैश्विक भरोसे को दर्शाती है।

एओटीएस जापान प्रशिक्षण कार्यक्रम— वैश्विक तकनीकी ज्ञान और जापानी संस्कृति की ओर एक सार्थक कदम

सीएसएल के 20 कर्मचारियों का छठा बैच एओटीएस जापान प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत जापान गया है। यह कार्यक्रम 5 से 17 नवंबर 2025 तक जापान में आयोजित किया गया । इसका उद्देश्य यार्ड कार्मिकों को वैश्विक स्तर पर हो रहे तकनीकी विकास से परिचित कराना तथा जापानी संस्कृति और परंपराओं की समझ विकसित करना है। 20 सदस्यीय इस दल में 10 महिला कार्मिक शामिल हैं, जो विविधता और समावेशी विकास के प्रति सीएसएल की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।



नशा मुक्त भारत अभियान



नशा मुक्त भारत अभियान के तहत, सीएसएल ने नशीले पदार्थों के दुरुपयोग के विरुद्ध सामूहिक शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया। यह शपथ सीएसएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के नेतृत्व में सीएसएल कर्मचारियों एवं सीआईएसएफ कर्मियों द्वारा ली गई, जिसमें अपने समुदाय, परिवार, मित्रों तथा स्वयं को नशे से दूर रखने की प्रतिबद्धता दोहराई गई। शपथ ग्रहण के उपरांत, सीएसएल कर्मचारियों एवं सीआईएसएफ कर्मियों ने इस संदेश को व्यापक रूप से प्रसारित करने के उद्देश्य से परिसर के चारों ओर एक मार्च में भाग लिया। आइए, मिलकर नशा मुक्त भारत के लिए एकजुट हों।

उम्मीद की ओर हाथ बढ़ाना - आत्महत्या रोकथाम के मूल सिद्धांत





बबीता भास्कर
अनीष वी आर की सुपत्नी

आत्महत्या की रोकथाम बड़े-बड़े प्रयासों से नहीं, बल्कि देखभाल के शांत, मानवीय पलों से होती है। यह तब शुरू होती है जब कोई व्यक्ति अपने दर्द में वास्तव में देखा, सुना और थामा हुआ महसूस करता है। आत्महत्या के विचारों से जूझ रहे कई लोग मृत्यु की तलाश में नहीं होते, बल्कि – भावनात्मक बोझ, अकेलेपन , भय या गहरी निराशा से राहत चाहते हैं। अक्सर वे इन भावनाओं को चुपचाप ढोते रहते हैं, यह सोचकर कि क्या कोई समझेगा या साथ देगा। जीवन कभी-कभी असहनीय रूप से भारी लगने लगता है। शोक, मानसिक स्वास्थ्य की चुनौतियाँ, रिश्तों की समस्याएँ, आर्थिक तनाव, बीमारी या आघात किसी व्यक्ति को धीरे-धीरे इतना थका सकते हैं कि दिन गुज़ारना भी बहुत मुश्किल लगने लगता है। जब कोई इस मुकाम पर पहुँचता है, तो उसे सबसे ज़्यादा सलाह या समाधान नहीं, बल्कि संबंध की ज़रूरत होती है। एक कोमल उपस्थिति उन्हें यह याद दिला सकती है कि वे महत्वपूर्ण हैं, उनका दर्द वास्तविक और मान्य है, और उन्हें यह सब अकेले सहने की ज़रूरत नहीं। यही छोटे-छोटे मानवीय क्षण आशा की शुरुआत बनते हैं।

सबसे प्रभावशाली कामों में से एक जो हम कर सकते हैं, वह है सुनना- बिना निर्णय किए, बिना जल्दी समाधान देने की कोशिश किए और बिना किसी की भावनाओं को कम करके आँके। "मुझे अच्छा लगा कि आपने मुझसे कहा" या "मैं आपके साथ हूँ" जैसे सीधे और सरल शब्द हमारी कल्पना से कहीं ज़्यादा सुकून दे सकते हैं। यह बिल्कुल ठीक है कि आप किसी से सीधे पूछें कि क्या वे खुद को असुरक्षित महसूस कर रहे हैं या खुद को नुकसान पहुँचाने के विचारों से जूझ रहे हैं। ऐसा पूछने से उनके मन में ऐसा विचार पैदा नहीं होता। इसके बजाय, यह एक ऐसा दरवाज़ा खोल सकता है जो बहुत समय से बंद था और वहीं से मदद, समझ और आशा की शुरुआत हो सकती है।

यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति का साथ दे रहे हैं जो कठिन समय से गुज़र रहा है, तो कुछ कोमल और सरल अभ्यास बहुत मददगार हो सकते हैं। शांत और उपस्थित रहने की कोशिश करें, भले ही आपको डर या असमंजस महसूस हो। बोलने से ज़्यादा सुनें और खामोशियों को भरने की जल्दी न करें। उनकी भावनाओं को गंभीरता से लें, भले ही आप उन्हें पूरी तरह समझ न पा रहे हों। पेशेवर मदद के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें और यह पेशकश करें कि आप साथ में विकल्प ढूँढने या किसी हेल्पलाइन/विशेषज्ञ को कॉल करने में मदद कर सकते हैं। सबसे ज़रूरी बात, अपने व्यवहार और शब्दों से उन्हें बार-बार यह महसूस कराएँ कि वे बोझ नहीं हैं और उनका जीवन कीमती और मूल्यवान है।

आत्महत्या की रोकथाम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े कलंक को तोड़ना भी है। जब भावनात्मक दर्द का सामना शर्म या चुप्पी से होता है, तो लोग मदद माँगने से कतराने लगते हैं। जब उसी दर्द का सामना करुणा और खुलेपन से होता है, तो चंगाई संभव हो जाती है। रिकवरी का मतलब यह नहीं कि ज़िंदगी अचानक आसान हो जाएगा, बल्कि इसका अर्थ यह है कि सही सहयोग मिलने पर दर्द बदल सकता है, नरम हो सकता है और संभालने योग्य बन सकता है। यदि आप इस समय संघर्ष कर रहे हैं, तो यह जान लीजिए: आपकी भावनाएँ वास्तविक और मान्य हैं, और मदद उपलब्ध है। आप देखभाल, समझ और अपने बोझ से राहत के पूरी तरह हकदार हैं। मदद के लिए हाथ बढ़ाना कमजोरी नहीं–यह साहस और आत्म-सम्मान का कार्य है। भले ही उम्मीद दूर लग रही हो, फिर भी वह दूसरों के हाथों और आवाज़ों के माध्यम से मौजूद हो सकती है, जो वहीं आकर आपसे मिलने के लिए तैयार हैं जहाँ आप इस समय हैं। यदि आप या आपका कोई परिचित संघर्ष कर रहा है या संकट में है, तो गोपनीय सहायता उपलब्ध है। आगे बढ़कर संपर्क करना किसी की जान बचाने वाला क़दम साबित हो सकता है।

केरल सरकार हेल्पलाइन
1056 / 0471-2552056 / 0471-2551056
(24 x 7)
भारत सरकार हेल्पलाइन
14416 / 1800-89-14416
(24 x 7)



कॉर्पोरेट कर्मयोगी



रमेश पी एस
वरिष्ठ प्रबंधक

कॉर्पोरेट कर्मयोगी की अवधारणा प्राचीन भारतीय ज्ञान—कर्म योग (निस्वार्थ कर्म का मार्ग)—को आधुनिक व्यावसायिक जगत की माँगों के साथ जोड़ती है। यह एक ऐसे पेशेवर का वर्णन करता है जो अपने काम को केवल वेतन या पद पाने के साधन के रूप में नहीं, बल्कि सेवा के एक रूप और आत्म-साधना के मार्ग के रूप में देखता है।

कॉर्पोरेट कर्मयोगी के मूल सिद्धांत

कॉर्पोरेट वातावरण में कर्मयोगी होना उच्च दबाव वाली परिस्थितियों में "अनासक्त संलग्नता" के साथ कार्य करना है। इसके स्तंभ इस प्रकार हैं:

- निष्काम कर्म (फल की आसक्ति के बिना कर्म): कार्य की गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करना, परिणाम (पदोन्नति, बोनस या प्रशंसा) पर नहीं।
- समत्व : सफलता और असफलता दोनों में मन को स्थिर रखना। कर्मयोगी न तो असफलता से टूटता है और न ही सफलता से अहंकार में डूबता है।
- कर्मसु कौशलम् (कर्म में कौशल): उत्कृष्टता के प्रति पूर्ण समर्पण। इस दृष्टिकोण में कार्य को खराब तरीके से करना आत्म-विकास के प्रति अनादर माना जाता है।
- लोकसंग्रह (संपूर्ण हित): ऐसे निर्णय लेना जो टीम, संगठन और समाज के लिए लाभकारी हों, न कि केवल व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा से प्रेरित।

आज के समय में इसका महत्व

मानसिक थकान, और अत्यधिक प्रतिस्पर्धा के इस युग में, कर्मयोगी मानसिकता एक स्थायी विकल्प प्रदान करती है। कॉर्पोरेट कर्मयोगी बनना न केवल आध्यात्मिक विकास के बारे में है; यह आज की उच्च-दबाव वाली व्यावसायिक दुनिया में महत्वपूर्ण व्यावहारिक और प्रतिस्पर्धी लाभ भी प्रदान करता है।

इस मानसिकता को अपनाने के प्रमुख लाभ:

1) **बर्नआउट से सुरक्षा:** बर्नआउट का मुख्य कारण "परिणाम की चिंता" है—यह डर कि आपकी कड़ी मेहनत का फल मिलेगा या नहीं। चूँकि कर्मयोगी परिणाम के बजाय प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित करता है, इसलिए "क्या होगा" का भावनात्मक तनाव खत्म हो जाता है। आप उस ऊर्जा को बचाते हैं जिसे दूसरे लोग चिंता में व्यर्थ कर देते हैं।

2) **शिखर प्रदर्शन :** जब आप अहंकार, ऑफिस की राजनीति या प्रशंसा की इच्छा से विचलित नहीं होते, तो आपकी एकाग्रता पूर्ण हो जाती है। यह आपको "फ्लो स्टेट" की ओर ले जाता है जहाँ आपकी उत्पादकता और रचनात्मकता, डर या लालच से प्रेरित लोगों की तुलना में कहीं अधिक होती है।

3) **निडर निर्णय लेना:** अधिकांश कॉर्पोरेट नेता "विश्लेषण के पक्षाघात" से जूझते हैं क्योंकि वे अपने करियर पर किसी गलत कदम के प्रभाव से डरते हैं। कर्मयोगी वह करता है जो स्थिति के लिए सही (धर्म) है, न कि वह जो उसकी छवि के लिए सुरक्षित है। यह स्पष्टता आपको एक साहसी और निर्णायक नेता बनाती है जिस पर दूसरे भरोसा करते हैं।

4) **भावनात्मक स्थिरता:** कॉर्पोरेट जगत जीत और हार का एक उतार-चढ़ाव भरा सफर है। समत्व भाव का अभ्यास करके, आप पदोन्नति से न तो फूले नहीं समाते और न ही प्रोजेक्ट की विफलता से तबाह होते हैं। यह स्थिरता आपको अपनी टीम में एक सहारा बनाती है, खासकर संकट के समय में।

5) **उच्च पेशेवर विश्वसनीयता:** लोग महसूस कर सकते हैं कि कोई केवल अपने फायदे के लिए काम कर रहा है या मिशन के लिए। एक कर्मयोगी अपार सम्मान और "सॉफ्ट पावर" प्राप्त करता है। सहकर्मी और ग्राहक उस व्यक्ति पर भरोसा करने और उसका अनुसरण करने की अधिक संभावना रखते हैं जो निस्वार्थ और उत्कृष्टता के प्रति समर्पित दिखता है।

6) **स्थायी सफलता:** लक्ष्य-संचालित पेशेवर अक्सर लक्ष्य तक पहुँचने के बाद थक जाते हैं क्योंकि उन्हें एहसास होता है कि लक्ष्य स्थायी खुशी नहीं लाया। एक कर्मयोगी के लिए, यात्रा ही पुरस्कार है। यह आपकी करियर की सफलता को दशकों तक टिकाऊ बनाता है।

निष्कर्ष

संगठनों में कर्मयोगी ढांचा केवल एक प्रशिक्षण पहल नहीं है—यह निरंतर सीखने, जवाबदेही और सेवा उत्कृष्टता की ओर एक सांस्कृतिक बदलाव है। स्व-संचालित विकास, नैतिक जिम्मेदारी और डिजिटल सशक्तिकरण को बढ़ावा देकर, यह कर्मचारियों को अखंडता और सार्वजनिक सेवा के मूल्यों में जड़ें जमाए रखते हुए बदलती चुनौतियों के अनुकूल बनने के लिए तैयार करता है।

अंततः कर्मयोगी कार्यस्थल को एक गतिशील पारिस्थितिकी तंत्र में बदल देता है जहाँ व्यक्ति केवल कार्य करने वाले नहीं, बल्कि उद्देश्यपूर्ण योगदानकर्ता होते हैं, जो अपने व्यक्तिगत विकास को संगठनात्मक लक्ष्यों और राष्ट्रीय प्रगति के साथ जोड़ते हैं।

डिजिटल भारत से साइबर सुरक्षित भारत तक का सफर।



भारत आज 2026 में एक ऐसा दौर जी रहा है, जहां व्यक्ति की हर एक जानकारी, पैसे, पहचान, यादें आदि कई सारी चीजें हैं जो कि बस एक क्लिक पर निर्भर करती है । आज के समय में जैसे-जैसे आधुनिक तकनीकें बढ़ती जा रही है, वैसे-वैसे यह डिजिटल ठगों के तरीके और अधिक खतरनाक और चालाक हो गए हैं ।

प्रमुख साइबर अपराध और उनके तरीके -

आज के समय में यूपीआई और क्यूआर कोड स्कैम यह एक बहुत बढ़ता जाने वाला स्कैम है, जिसमें यह स्कैमर आपको पैसे प्राप्त करने के नाम पर, एक क्यूआर कोड स्कैन करने को कहेगा, जबकि स्कैन करते ही आपके खाते से पैसे कट जाएंगे । डिजिटल धोखाधड़ी में फिशिंग और विशिंग नामक फ्रॉड भी देखे गए हैं । जिसमें अपराधी आपको बैंक अधिकारी बनकर कॉल करते हैं, या वह नकली लिंक भेजते हैं, जिसमें अगर आप उस लिंक पर क्लिक करते हो तो आपकी सारी निजी जानकारी जैसे कि आपके ओटीपी, पासवर्ड, फोटो, वीडियो और आदि दस्तावेज जो कि आपके मोबाइल और कंप्यूटर में स्थित है, वह सारी जानकारी इन अपराधियों तक बड़ी आसानी से पहुंच जाती है । इस अपराध की सीमा यहीं तक नहीं रूकती, यह डिजिटल अपराधी आपके कैमरा, कॉल रिकॉर्डिंग, चल रहे कॉल, वीडियो कॉल, गूगल मीट, ईमेल, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, फेसबुक आदि को हैक कर उन तक आसानी से अपनी पहुंच बना लेते हैं । आजकल के नए एआई तकनीक से, एक नए अपराध की बढ़ोतरी हुई है । जिसका नाम फोटो मॉर्फिंग और डीपफेक है । इस अपराध में एआई तकनीक का उपयोग करके किसी भी फोटो या वीडियो को आपत्तिजनक रूप में बदल दिया जाता है, जिसका उपयोग ब्लैकमेलिंग के लिए होता है। आज इस 2026 वर्ष का एक सबसे चर्चित स्कैम, डिजिटल अरेस्ट फ्रॉड है । इसमें ठग खुद को पुलिस या सीबीआई अधिकारी बताकर आपको डराते हैं, कि आपके नाम पर कोई अवैध पार्सल पकड़ा गया है और आपको घर में डिजिटल कैद रहने को कहते हैं, जब तक आप उन्हें मुंह मांगे पैसे ना दे दें ।

साइबर अपराध के गंभीर परिणाम -

इन अपराधों से पीड़ितों को होने वाली आर्थिक हानि, जिसमें जीवन भर की जमा पूंजी कुछ ही क्षणों में गायब हो सकती है । पीड़ित को ब्लैकमेल और डेटा चोरी से गहरा मानसिक अवसाद और सामाजिक बदनामी की ओर धकेल देती है । पीड़ित की निजी तस्वीरें और चैट्स सार्वजनिक की जा सकती है, जिससे पीड़ित की गोपनीयता का अंत हो सकता है । यदि पीड़ित के अकाउंट का उपयोग किसी अवैध गतिविधि के लिए किया जाता है, तो बिना गलती के भी पीड़ित कानूनी जांच के घेरे में आ सकते हैं ।

समाधान -

एक आम नागरिक होते हुए भी आप इन डिजिटल ठगों को रोककर अपने आप को सुरक्षित रख सकते हो। इसमें सबसे पहला है "टू - फैक्टर ऑथेंटिफिकेशन" यह आपको ऑन रखना है, जिससे आपका ईमेल अकाउंट सुरक्षित रहे । आप अपने हर ऐप का पासवर्ड अलग और कठिन रखें, इससे आप अकाउंट हैकिंग से बच सकते हो। यदि किसी भी अनजान नंबर से कोई लिंक आए, तो उस पर कभी क्लिक ना करें । चाहे वह लॉटरी या कोई डिस्काउंट कूपन ही क्यों ना हो । फ़ेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे ऐप पर आने वाले अनजान लोगों की फ्रेंड रिक्वेस्ट स्वीकार ना करें और इन सारे सोशल मीडिया प्रोफाइल को प्राइवेट रखें । हमेशा याद रखें, पैसे प्राप्त करने के लिए कभी किसी अवैध ऐप पर पैसों की लेनदेन ना करें और उस ऐप का कोई क्यूआर कोड स्कैन ना करें । यदि आपको कोई अज्ञात कॉल पर डराए या धमकाए, तो घबराए नहीं । तुरंत फोन काटें और अपने परिवार या स्थानीय पुलिस को सूचित करें ।

शिकार होने के बाद पीड़ित क्या करे? -

भारतीय सरकार ने पीड़ितों की सुरक्षा के लिए कड़े नियम और सहायता केंद्र बनाए हैं । सबसे पहला आप राष्ट्रीय साइबर अपराध हेल्पलाइन नंबर 1930 पर तुरंत कॉल करें ।और आपके साथ घटित घटना के बारे में उन्हें रिपोर्ट करें । इसके बाद आप अपनी शिकायत को www.cybercrime.gov.in पोर्टल पर दर्ज करें । पीड़ित की अगर वित्तीय धोखाधड़ी हो तो उसे अपने बैंक को सूचित करना है और अपना कार्ड और खाता ब्लॉक करवाना है ।

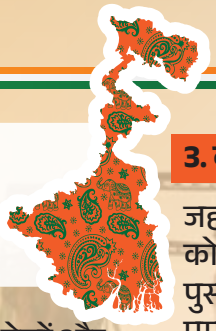


आकाश मारुति गोंडे
स्नातक प्रशिक्षार्थी

निष्कर्ष -

डिजिटल दुनिया में डिजिटल अपराधियों से बचना हो, तो "सतर्कता ही सुरक्षा" का सूत्र हमें अपने आप को सिखाना होगा । आधुनिक तकनीक जैसे कि एआई का उपयोग डरने के लिए नहीं बल्कि समझदारी से खुद को सशक्त बनाने के लिए करें । डिजिटल फ्रॉड का शिकार बनने पर बिना विवेक खोए उसका समाधान ढूंढिए, क्योंकि आपका विवेक ही आपको और आपके परिवार को इन अदृश्य खतरों से बचा सकता है ।

बंगाल और उसकी शीतकालीन मेले की संस्कृति



पश्चिम बंगाल में, सर्दी सिर्फ एक मौसम नहीं है; यह मेलों और उत्सवों का मौसम है जिसे लोकप्रिय रूप से "मेला सीजन" के नाम से जाना जाता है। जैसे-जैसे आर्द्रता कम होती है और तापमान गिरता है, राज्य रंग-बिरंगे छतरियों, खजूर के गुड़ (नोलेन गुड़) की सुगंध और एकतारा की मधुर ध्वनि से सराबोर हो उठता है।

इन मेलों का आकर्षण गहरी ग्रामीण परंपराओं और कला एवं भोजन के प्रति आधुनिक शहरी प्रेम के संगम में निहित है।

1. सांस्कृतिक आत्मा: पौष मेला (शांतिनिकेतन)

रवींद्रनाथ टैगोर के पिता महर्षि देबेंद्रनाथ टैगोर द्वारा आरंभ किया गया यह मेला बंगाली संस्कृति का हृदय है।

माहौल: बीरभूम जिले की लाल मिट्टी के बीच आयोजित यह मेला फसल कटाई के मौसम का प्रतीक है। यहाँ आपको वृक्षों के नीचे बाउल गायकों का गायन और संथाल आदिवासी नृत्य देखने को मिलेंगे।

खजाने की वस्तुएँ: बाटिक प्रिंट, उभरे हुए डिज़ाइन वाले चमड़े के थैले और प्रसिद्ध डोकरा (लॉस्ट-वैक्स कास्टिंग) धातु कला की तलाश करें।

भोजन: यहाँ आपको प्रामाणिक पीठे (पारंपरिक चावल के केक) और ताजे शीतकालीन गुड़ से बने पटिशाप्ता मिलेंगे, जो आधुनिक फास्ट फूड के साथ मिश्रित हो गए हैं। यहाँ के विभिन्न स्टॉल भोजन प्रेमियों के लिए स्वर्ग हैं।

2. आध्यात्मिक रहस्य: जयदेव केंदुली मेला

मकर संक्रांति के दौरान अजय नदी के तट पर आयोजित होने वाला यह मेला राज्य का सबसे मनमोहक मेला है।

बाउल परंपरा: यह बाउलों और फकीरों का एक विशाल जमावड़ा है। हजारों घुमंतू संगीतकार अस्थायी अखाड़े (शिविर) लगाते हैं, जहां दिन-रात संगीत और दर्शन का प्रवाह होता रहता है।

इतिहास: यह गीता गोविंद के रचयिता कवि जयदेव की स्मृति में आयोजित किया जाता है। पृष्ठभूमि में स्थित टेराकोटा मंदिर एक अत्यंत सुंदर ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रदान करते हैं।

3. बुद्धिजीवियों का स्वर्ग: कोलकाता अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला

जहां ग्रामीण मेले लोक परंपराओं का जश्न मनाते हैं, वहीं कोलकाता बोई मेला दुनिया का सबसे बड़ा गैर-व्यापारिक पुस्तक मेला है और बंगाल के बौद्धिक संवाद के प्रति प्रेम का प्रमाण है।

अनुभव: यह सिर्फ किताबें खरीदने की बात नहीं है; यह नए कागज की महक और इंडियन कॉफी हाउस के स्टॉल से आती कॉफी की खुशबू का मिश्रण है।

भीड़: आपको यहां प्रसिद्ध लेखकों और छात्रों से लेकर परिवारों तक, हर कोई हजारों स्टॉलों में घूमते हुए अपना पूरा दिन बिताता हुआ दिखाई देगा।

4. भव्य तीर्थयात्रा: गंगासागर मेला

गंगा नदी के बंगाल की खाड़ी में संगम स्थल सागर द्वीप पर आयोजित होने वाला यह मेला कुंभ मेले के बाद भारत का दूसरा सबसे बड़ा जनसमूह है।

इसका आकर्षण: पानी पर तैरते हजारों दीयों और धुंध से ढके नदी तटों का दृश्य एक अलौकिक, आध्यात्मिक वातावरण बनाता है जो कहीं और मिलना मुश्किल है।

5. शीतकालीन मेले: भोजन और हस्तशिल्प (पश्चिम बंगाल राज्य हस्तशिल्प मेला)

महज एक बाजार नहीं है; यह भारत में ग्रामीण कारीगरों का सबसे बड़ा जमावड़ा है। पश्चिम बंगाल के लघु एवं मध्यम उद्यम एवं वस्त्र विभाग द्वारा आयोजित इस मेले की विशेषता यह है कि यह ग्रामीण शिल्पकारों और शहरी खरीदारों के बीच सीधा संपर्क स्थापित करता है और बिचौलियों को पूरी तरह से समाप्त कर देता है।हर स्थानीय शीतकालीन मेले (जैसे कोलकाता का बिष्णुपुर मेला या सबाला मेला) में एक समान आकर्षण होता है:

यह मेला अनोखे ढंग से आयोजित किया जाता है। स्टॉलों को अक्सर बंगाल की प्रमुख नदियों (जैसे गंगा, भागीरथी, तीस्ता) के नाम पर बने मंडपों में समूहित किया जाता है। प्रत्येक मंडप अलग-अलग जिलों का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे आप शिल्पकला के माध्यम से राज्य के भूगोल की "यात्रा" कर सकते हैं।

आम प्रदर्शनियों के विपरीत, यहाँ अक्सर कारीगरों को काम करते हुए देखा जा सकता है। चाहे वह चित्रकार द्वारा किसी चित्र की कहानी का गायन हो या बुनकर द्वारा जामदानी करघे पर काम करना, यह मेला विरासत के एक जीवंत संग्रहालय के रूप में कार्य करता है।

हस्तशिल्प मेला



पौष मेला (शांतिनिकेतन)



हस्तशिल्प: बांकुरा और पुरुलिया: टेराकोटा घोड़ों, डोकरा (खोई हुई मोम धातु की ढलाई) और भयंकर छाऊ मुखौटों के लिए प्रसिद्ध। **बीरभूम:** शांतिनिकेतन चमड़े के सामान और कांथा सिलाई कढ़ाई के लिए जाना जाता है। **मेदिनीपुर:** पटचित्र (स्क्रॉल पेंटिंग) और मदुरकथी (प्राकृतिक फाइबर मैट) का घर। **कूच बिहार:** शीतलपाटी (ठंडी चटाई) और जटिल बांस/बेंत के काम में विशेषज्ञता।

स्वाद: शीतकालीन मेले खजूर के गुड़ (नोलेन गुड़) के पर्याय हैं। आपको हर कोने पर झालमुरी, आलू काबली और गरमागरम कचोरी मिलेंगी।

सवारी: क्लासिक लकड़ी का "नागोरडोला" (मैनुअल फेरिस व्हील) आज भी बच्चों और बड़ों दोनों के लिए एक यादगार आकर्षण बना हुआ है।



सौमिता घोष
प्रबंधक

• • •

आतिरपिल्ली – स्कूल के लिए मिनी थिएटर : सी एस आर परियोजना दौरे पर रिपोर्ट



जिस कंपनी में मैं काम करती हूं, उसके लिए अपनेपन और गर्व की एक मज़बूत भावना उस दिन पैदा हुई। हालांकि मैंने कंपनी द्वारा किए जाने वाले कई शानदार सीएसआर पहलों के बारे में सुना था, लेकिन मैंने पहले कभी इसका असर इतना गहरा या व्यक्तिगत महसूस नहीं किया था। इसे खुद अनुभव करने के बाद, यह सच में बहुत सार्थक लगा।

यह पहल त्रिशूर जिले की आतिरपिल्ली ग्राम पंचायत के एक स्कूल के लिए की गई थी, जहां परियोजना के हिस्से के तौर पर एक मिनी थिएटर शुरू किया गया। इस गांव के समुदाय और बच्चे एक अलग बोली बोलते हैं, जिससे अध्यापकों के लिए भी ठीक से बात करना और पढ़ाना मुश्किल हो जाता है। क्योंकि यह स्कूल एक आदिवासी समुदाय के बच्चों के लिए है, इसलिए शब्दों के माध्यम से केवल समझाने की बजाय जब अवधारणाएँ दृश्य रूप में प्रस्तुत की जाती हैं, तो छात्र उन्हें बेहतर ढंग से सीख सकते हैं। इसी कारण मिनी थिएटर न केवल छात्रों के लिए हैं, बल्कि पूरे गांव के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण संसाधन बन जाता है। यह सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाता है, संवाद की दूरी को कम करता है और बच्चों को अधिक रोचक तथा समावेशी तरीके से शिक्षा का अनुभव करने का अवसर प्रदान करता है।

जब हम वहाँ पहुँचे और उन बच्चों के साथ बैठे, जिनमें से कई शायद पहली बार किसी थिएटर में आए थे, उनके साथ वीडियो देखना वास्तव में बेहद रोमांचक अनुभव था। भले ही हमें शब्दों में पता हो कि हमारे सीएसआर पहलों के ज़रिए हम जिन लोगों की सहायता करते हैं, उनके लिए यह कैसा होता है, लेकिन उस दिन हमने उसे वास्तव में महसूस किया।

यह देखना वास्तव में बहुत अच्छा लगा कि पूरा गांव एक साथ मिलकर काम कर रहा था, क्योंकि वे जानते थे कि आज के बच्चे ही कल का भविष्य हैं। हमारी कंपनी को ऐसे मूल्यवान परियोजना में सहयोग करते देखना सचमुच हृदयस्पर्शी था और इससे यह भी स्पष्ट हुआ कि हम कार्य करने के लिए सर्वोत्तम से सर्वोत्तम परियोजनाओं का चयन कैसे करते हैं।

न केवल गंतव्य और परियोजना रोमांचक थे, बल्कि यात्रा स्वयं भी अच्छे अनुभवों से भरी हुई थी। हमें अपनी कंपनी के ऐसे सहकर्मियों से मिलने और उनसे बातचीत करने का अवसर मिला, जिनके पास हमसे कहीं अधिक अनुभव था। उनसे बात करना और अनुभव साझा करना इस यात्रा का सबसे कीमती अनुभव था, जिसे मैंने अपने साथ लिया।

मेरा मानना है कि किसी भी संगठन का हर कर्मचारी इस तरह का अनुभव प्राप्त करे ताकि वह यह समझ सके कि उनकी कंपनी किन मूल्यों को महत्व देती है। अपने करियर के शुरुआती चरण में इस अदभुत अवसर को पाना मेरे लिए एक बेहतरीन अनुभवों में से एक था। मैं ऐसे परियोजनाओं का हिस्सा बनने और उनसे और अधिक सीखने के लिए उत्साहित हूं।



हानिया सलीम
कार्यपालक प्रशिक्षार्थी

मेघालय : बादलों की यात्रा



मेरा नाम गौरी शंकर है और मेरा मेघालय का सफर ऐसा लगा जैसे मैं किसी कोमल सपने में कदम रख रहा हूँ। यह भूमि जिसे "बादलों का घर" कहा जाता है, ने मुझे ठंडी हवा, हल्की बारिश और अंतहीन हरियाली से स्वागत किया। शुरूआत से ही मेघालय शांत, दयालु और एक अनकही सुंदरता से भरा लगा।

शिलॉग, इसकी राजधानी, एक साथ शांत और जीवंत स्थान जैसा लगा। रास्तों पर चीड़ के पेड थे, छोटे-छोटे कैफे से संगीत की धुनें आती थी और लोग बिना झिझक आपस में मुस्कुराते थे। वहाँ का जीवन धीरे चलता है, मानों पहाड़ों ने सभी को थोड़ा गहरा साँस लेने और चिंता कम करना सिखा दिया हो।

मैंने वॉर्ड्स लेक का दौरा किया, एक सुंदर बगीचा जहाँ शांत जल था, और शिलॉग की चोटी पर गया जहाँ से पूरे शहर का मनमोहक दृश्य दिखाई देता था। जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ा, मैने चट्टानों से गिरते झरने और इतने करीब से बहते बादल देखें कि उन्हें छूना संभव सा लगा। चिरापूंजी में, जहाँ पर अकसर बारिश होती है, जिस से धरती साफ और चमकदार लगती है, वहाँ पर भी मैं गया। मैं नोहकलिकाई झरने पर गया, वह छोटा था लेकिन खुश महसूस कर रहा था, जैसे प्रकृति मुझे अपनी ताकत और देखभाल की याद दिला रही हो।

एक सबसे खास दृश्य था मौलिन्नोंग के जीवित जड पुल। पेड़ों की जड़ों से बने ये पुल कई सालों में बढ़ते है। इन पर चलना जादुई सा लगा। ये दिखाते है कि लोग और प्रकृति धैर्य और विश्वास के साथ ये काम कर सकते हैं। मौलिन्नोंग जिसे एशिया का सबसे साफ- सुथरा गाँव कहा जाता है सरल और स्वागतपूर्ण था। मैने डॉकी भी देखा, जहाँ डमंगोट नदी इतनी साफ थी कि लगता था नावें हवा में तैर रही हो। गाँव, बाँस का घर और दोस्ताना बच्चें इस यात्रा को और भी गर्मजोशी और शांति से भर देते थे। हर भोजन जो ताज़ा स्थानीय सामग्री से बनती था ऐसा लगा जैसे इसे प्रेम से साझा किया गया हो।

जब मैं मेघालय छोड़ रहा था तो मैंने अपने साथ केवल तस्वीरे ही नहीं बल्कि अपार शांति भी लिया। इस यात्रा ने मुझे सिखाया कि सुंदरता बाहर से नही परखी जाती। कभी-कभी यह बादल, बारिश, नदियां और हरे- भरे पहाड़ों के माध्यम से धारे- धीरे फुस फुसाती है- और हमेशा केलिए हमारे साथ रहती है।



गौरीशंकर ए पी
बिंदु पी वी का सुपुत्र

भारतीय व्यंजन

अंडा मालपुवा

अण्डा मालपुआ :
दक्षिण मुम्बई की दिशा में मालपुआ की अधिक लोक प्रियता हैं । अण्डे का मिश्रण, आटे के मिश्रण और चीनी को पूर्णता के साथ तला हुआ और गरम परोसा जाता है। मेरा खास स्वादिष्ट व्यंजन हैं ... आइए बनते हैं।

सामग्री :
1) मैदा का आटा (300 ग्राम)
2) अण्डे (2)
3) दूध (100 ग्राम)
4) शक्कर (50 ग्राम)
5) जलेबी का रंग (3 ग्राम)
6) इलायची पाउडर (5 ग्राम)
7) खाद्य तेल (500 ग्राम)
8) काजू बादाम एवम् पिस्ता बारीक कटा हुआ (30 ग्राम)



विधि :
आधे किलो की पतीली में सबसे पहले मैदे के आटे को 300 ग्राम डाले । उसके बाद 2 अण्डे ले उन्हें अच्छे से फोड़ कर पतीली में डाले । अब 50 ग्राम शक्कर डालें थोड़ी खुशबू के लिए इलायची का पाउडर भी मिश्रित कर लें । 100 ग्राम दूध डालकर अच्छी तरह फेंटे । आखिर में जलेबी का रंग डालकर उसे फेंटे (फेंटते समय उसमें गांठे न बने इसका ध्यान दे) अभी खाद्य तेल 230° सेल्सियस पर गरम कर ले । अभी तैयार मिश्रण को इस गरम तेल में गोलाकार तरीके से डाले (आकृति अनुसार) । इसे हल्का सुनहरा होने तक तलें । अतः आपका मालपुआ तैयार है ।

परोसने का सुझाव :
आप रबड़ी, गुड की चाशनी एवं नेस्ले मिल्कमेड के साथ आप इस स्वादिष्ट पकवान का आनंद ले सकते हैं ।

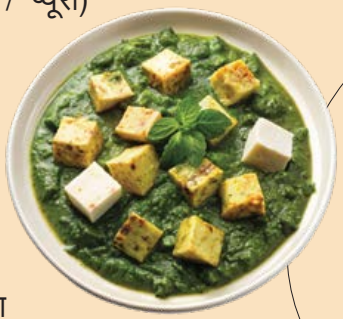


फातिमा शेख़
मोहम्मद कादर शेख़ की माँ

पालक पनीर

पालक पनीर की सामग्री

- 1½ कप पालक (उबला हुआ और पिसा हुआ)
- 500 ग्राम पनीर (चकोर टुकड़ों में कटा हुआ)
- ¼ कप तेल
- 1 टी-स्पून जीरा
- 1 तेज पत्ता
- 1 टी-स्पून अदरक (बारीक कटा हुआ / पेस्ट)
- 1 टी-स्पून लहसुन (बारीक कटा हुआ / पेस्ट)
- ½ कप प्याज़ (कद्दूकस किया हुआ)
- 1 कप टमाटर (बारीक कटे हुए / प्यूरी)
- 2 टी-स्पून नमक (स्वादानुसार)
- ½ टी-स्पून लाल मिर्च पाउडर
- ¼ टी-स्पून गरम मसाला
- 1-2 टेबलस्पून क्रीम (वैकल्पिक)



पालक पनीर बनाने की विधि

1) पालक को प्रेशर कुकर में हल्का उबाल लें, ठंडा होने पर मिक्सी में पीस लें।
2) एक पैन में तेल गरम करें और पनीर के टुकड़ों को हल्का सुनहरा होने तक फ्राई कर लें। निकालकर अलग रखें।
3) उसी तेल में जीरा डालें। जब जीरा चटकने लगे, तब तेज पत्ता डालें।
4) अब अदरक, लहसुन और प्याज़ डालकर धीमी आँच पर गुलाबी होने तक भूनें।
5) इसमें नमक, लाल मिर्च पाउडर और गरम मसाला डालकर अच्छी तरह मिलाएँ।
6) अब टमाटर की प्यूरी डालें और तेल अलग होने तक मध्यम आँच पर भूनें।
7) इसमें पिसा हुआ पालक डालें और 2-3 मिनट तक पकाएँ।
8) अब फ्राई किए हुए पनीर के टुकडे डालकर हल्के से मिलाएँ।
9) अंत में क्रीम डालकर गैस बंद करें और गरमागरम परोसे।



स्वाति कृष्णा वी पी
परियोजना अधिकारी

मेहनत से मुकाम तक

कर्मचारियों की प्रेरणादायक शैक्षिक यात्रा

निरंतर सीखने और आत्म-विकास की भावना ही सफलता की सच्ची पहचान है। हमें अत्यंत हर्ष और गर्व है कि हमारे समर्पित कर्मचारियों ने अपने दैनंदिन कार्यों की जिम्मेदारियों का कुशलतापूर्वक निर्वहन करते हुए, अन्नामलै विश्वविद्यालय, तमिलनाडु से मानव संसाधन में एमबीए की उपाधि सफलतापूर्वक प्राप्त की है।



निव्या टी आर
वाणिज्यिक सहायक-
वरिष्ठ ग्रेड



प्रिया ए आर
वाणिज्यिक सहायक-
वरिष्ठ ग्रेड



अनिता टी पी
सहायक
प्रशासनिक अधिकारी



मंजु के ए
वाणिज्यिक सहायक



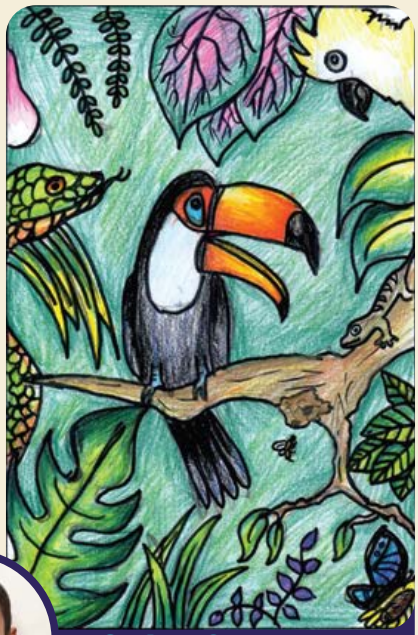
कोचीन शिपयार्ड प्रबंधन की ओर से इन सभी कर्मचारियों को इस शानदार उपलब्धि पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

चित्र रचनाएँ





मिखा आर तेरेसा
रेनॉय जॉण की सुपुत्री





अर्जव के श्रीधरन
उण्णिकृष्णन के एस का सुपुत्र





वैष्णवी रमेश
रमेष पी एस की सुपुत्री





अलन माधव यू एन
नीतु के , का सुपुत्र





रिशान
सौमिता घोष का सुपुत्र





अक्षिता रंदीप
रंदीप एस की सुपुत्री





अषिका सुजित
सुजित एन पी की सुपुत्री





श्रेष्ठ दिव्या
बद्रीश कुमार दिव्या का सुपुत्र





नवीन कृष्णा जी
बिंदु एम आर का सुपुत्र










ओणम समारोह





कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड

भारत सरकार का उद्यम

(एक मिनिरत्न अनुसूची 'ए' कंपनी)

पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय

पेरुमानूर पी.ओ., कोच्ची - 15